राज
कॉमिक्स
विशेषांक
मूल्य 20.00
संख्या 41
मैंने मारा ध्रुव को
अनुपम
ANWAR

सुपर कमांडो ध्रुव मारा गया ! एक महान गाथा का अंत हो गया !
मुसीबतों को खुशहालियों में बदल देने वाला शख्स, मजबूरों और कमजोरों के बाजुओं की ताकत, जुल्म का कट्टर दुश्मन ...
... और अपराधियों का काल बनकर उनके मौत का फर्मान लिखने वाली हस्ती आज... आज चिता के उस पार जा चुकी है !
कैसे मरा ध्रुव, यह कोई नहीं जानता !
यह खबर पूरी तरह से दबा दी गई है !
जानता है, तो सिर्फ एक शख्स ! वह खलनायक या खलनायिका, जिसने मारा ध्रुव को। पर वह है कौन ?
जानना मुश्किल ही नहीं, असंभव लगता है। क्योंकि हर बड़ा अपराधी यह दावा कर रहा है कि ...
मैंने मारा ध्रुव को
कथा एवं चित्र: अनुपम सिन्हा; इंकिंग: विनोद कुमार; सम्पादक: मनीष गुप्ता

वे सब झूठ बोल रहे हैं। बक रहे हैं। अपने आपको महान सिद्ध करना चाहते हैं।
ध्रुव की जान... इन हाथों ने ली है। 'ग्रैंड मास्टर रोबो' के हाथों ने!
जानना चाहते हो किस तरह...
इस तरह... तरह...
हर खलनायक यही दावा कर रहा है, रोबो!
कड़ाक
लेकिन मुझ पर वार करने की कोशिश मत करो! मुझको तुम छू भी नहीं सकते!
वैसे भी, मैं तुम्हारा न दुश्मन हूं और न ही दोस्त!
क... कौन हो तुम?
मैं हूं... कंकाल तंत्र! एक महान योद्धा! मेरा शौक है, हर युग में जाकर उस युग के योद्धाओं को मात देना!
और मैं यह जानना चाहता हूं कि... किसने मारा ध्रुव को? वैसे तो हर छोटा-मोटा खलनायक भी यह दावा कर रहा है।
लेकिन इस युग में सिर्फ आठ ही ऐसे महाखलनायक हैं जो यह काम करने की क्षमता रखते हैं।
मैं कहां से आया हूं, यह मैं बताने की कोशिश अगर करूंगा भी तो भी तुम समझ नहीं पाओगे। बस इतना जान लो कि मैं यहां पर आया था, इस युग के महान वीर 'सुपर कमांडो ध्रुव' को मात देने...
उस शौर्य की जीती-जागती मूर्ति को मात देने, जिसको आज तक कोई झुका नहीं पाया, लेकिन मेरे यहां पर पहुंचने से पहले ही वह अजेय योद्धा मारा गया...
और तुम उनमें से एक हो, ग्रैंड मास्टर रोबो!

मैंने एक 'अपराध-अदालत' बिठाई है, जिसमें हर महाखलनायक अपना दावा पेश करेगा! सच झूठ का फैसला मैं करूंगा।
वह बनेगा... परम खलनायक!
और जिसका दावा सही पाया जाएगा, उसको मैं दूंगा... पूरी पृथ्वी पर राज्य करने की शक्ति!
तुम दोगे शक्ति?
और मुझे? हा हा हा!
मेरी शक्तियों के सामने तुम्हारी पृथ्वी की सारी शक्तियां तुच्छ हैं!
मैं कुछ भी कर सकता हूं।
दौलत के ढेर लगा सकता हूं!
सोना!
एक इशारे में किसी भी चीज को हवा में मिला सकता हूं।
कड़क
तुमको भी!
ब... बस! समझ गया।
मैं चलने को तैयार हूं।
फिर आओ! बाकी खलनायक हमारा इंतज़ार कर रहे हैं।

दुर्गम पहाड़ों की वह चोटी ! जहां पर हैलीकॉप्टर तक नहीं जा सकता था—
बादलों और कुहासे से ढकी हुई वह चोटी—
और उसी चोटी की एक गुफा के अन्दर—
बैठी थी- कंकालतंत्र की क्राइम कोर्ट—
जिसमें मौजूद थे इस दुनिया के आठ महानतम खलनायक ! और मौजूद थे पूरी दुनिया के माफिया बॉस । जो सिर्फ उसी महाखलनायक की आधीनता स्वीकार करने को तैयार थे, जिसने ध्रुव का खात्मा किया था—
सभी बेताब थे अपने-आपको ध्रुव का हत्यारा सिद्ध करने के लिए—
ताकि पा सकें 'परम-खलनायक' का खिताब—
और हासिल कर सकें पूरी दुनिया पर राज्य करने की शक्ति—
शांति ! हर महाखलनायक को अपना पूरा पक्ष प्रस्तुत करने की इजाजत दी जाएगी । और उनसे जिरह करेगा मेरा रोबोट बायोट्रॉन !
इसके अन्दर पूरी पृथ्वी की सारी जानकारी भरी हुई है ।
इसलिए सावधान ! तुम्हारे किसी भी झूठ को यह तुरन्त पकड़ सकता है !
अब मैं प्रथम महाखलनायक को अपनी शौर्य गाथा सुनाने के लिए आमंत्रित करता हूं ।
श्रीमान ध्वनिराज !

अपनी पराध्वनि यानी अल्ट्रासोनिक तरंगों से। ध्वनिराज का एक वार भी नहीं सह सका, वह हाड़-मांस का शैतान!
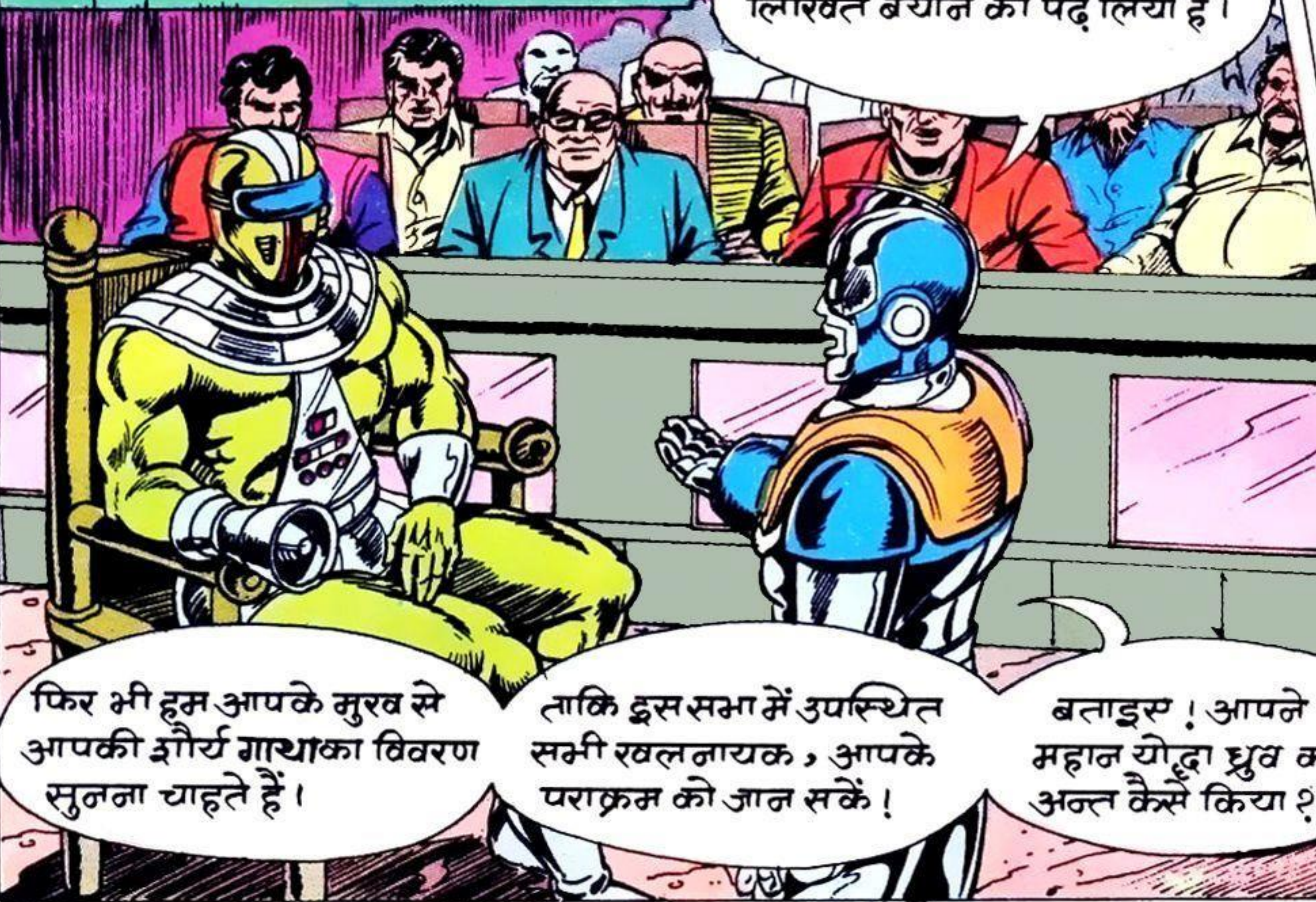
लेकिन मैंने उस बदले की भावना को थोड़े समय के लिए दबा लिया—

लेकिन मेरी कहानी बहुत पहले से शुरू होती है। कई महीनों पहले से—

तब से, जब से मैं नारका जेल से रिहा हुआ—

राजनगर को, अपनी ध्वनि तरंगों से धूल में मिलाने की धमकी देकर, पचास करोड़ रुपए हासिल करने का मेरा प्लान धूल में मिल चुका था—☆

••• मेरी अल्ट्रासोनिक तोप अब किसी कबाड़घर की शोभा बढ़ा रही थी—

और यह सब सिर्फ एक शख्स के कारण हुआ था—

सुपर कमांडो ध्रुव के कारण।

मेरे दिल में धधकती बदले की आग की लपटें, आसमान को छू रही थीं।

क्योंकि उस वक्त मुझे अपने लिए एक अत्यन्त शक्तिशाली अल्ट्रासोनिक ब्लास्टर का निर्माण करना था—
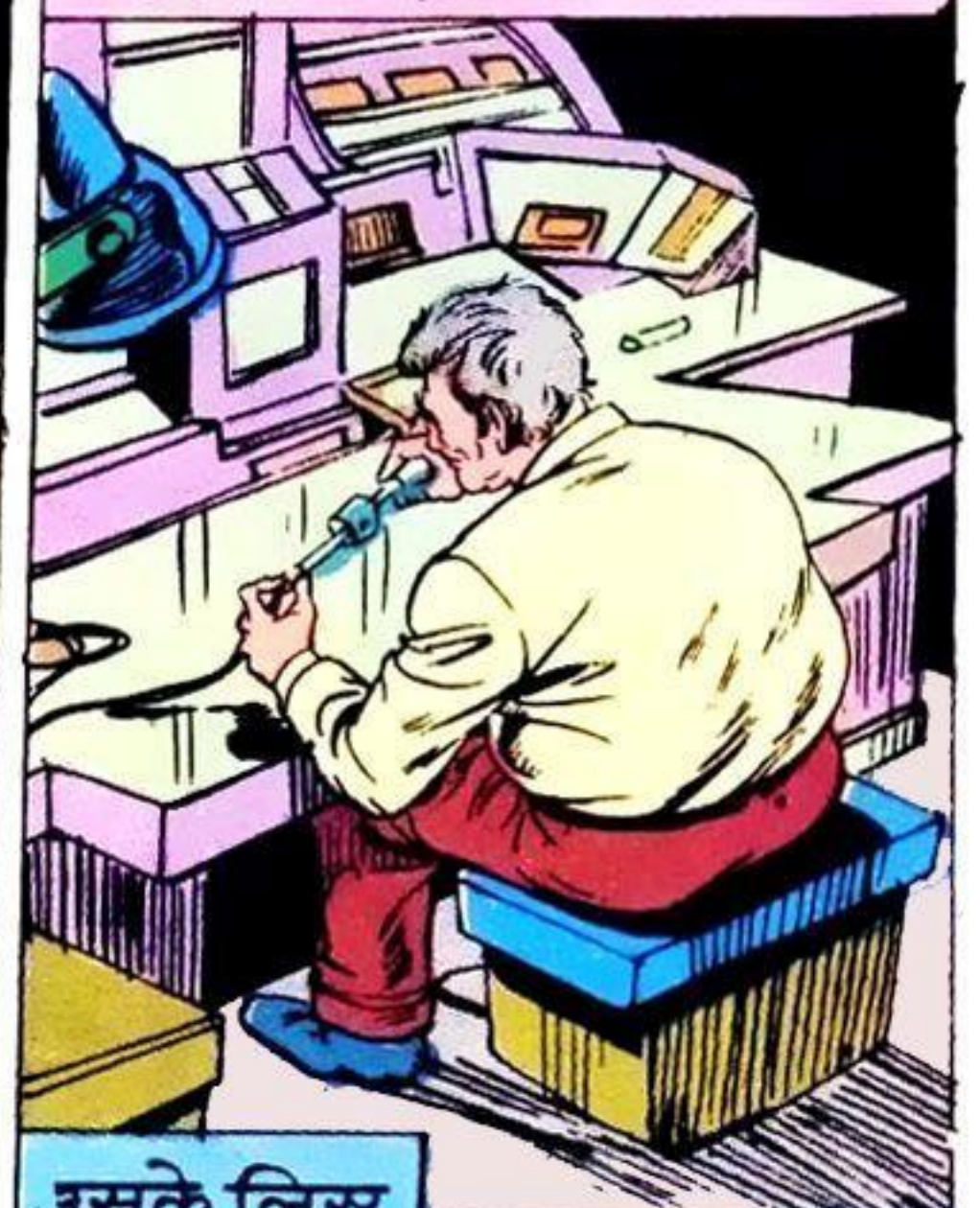
उसके लिए मुझे जरूरत थी पैसों की। और पैसे मिलते हैं •••

☆ पढ़िए 'आवाज की तबाही'

...बैंक में—
आज बैंक में कितना कैश मंगाया है, गद्रे ?
तीस लाख रुपए, सर ! दो-तीन दिनों का काम हो जाएगा इससे !
लेकिन दो-तीन दिनों का काम...
... दो-तीन मिनटों में हो जाना था—
छनाक
म... मेरा गिलास टूटा कैसे ?
बचिए, सर ! टेबल भी टूट रही है !
कड़ड़ड़ड़ड़
मैनेजर और गद्रे की भयभीत नजरें चारों तरफ घूमकर, एक अजीबो-गरीब वस्तु पर चिपककर रह गईं—
चमगादड़ !
और वह भी... दिन में...
वे बस इतना ही कह पाए—
क्योंकि तभी— चमगादड़ों की पूरी फौज ने धड़धड़ाते... या कहिए... कड़कड़ाते हुए बैंक के अन्दर प्रवेश किया—
कड़ड़ड़ड़ड़ड़ड़ड़ड़ाम
और पूरे बैंक में कहर टूट पड़ा—
मजबूत दीवारें— ताश के पत्तों की तरह ढहने लगीं—

यह कमाल था, उन चमगादड़ों के गले से निकलती प्राकृतिक अल्ट्रासोनिक तरंगों का—
SAVE MONEY
धड़ाड़मममम
जिन तरंगों को मैंने, उन चमगादड़ों के गलों में एक छोटा-सा यंत्र फिट करके, घातक और विस्फोटक स्तर का बना दिया था—

और उन घातक तरंगों के सम्मिलित हमले के सामने बैंक लॉकर का मोटा स्टील दरवाजा भी नहीं टिक सकता था।
तीस लाख रुपए के नोट अब खुले में पड़े हुए थे।

उनको इंतजार था मेरा।
और मेरे आदमियों के हाथों में थमे बैगों का—
मैं अपने बेशकीमती चमगादड़ों को, बॉक्स के अन्दर, बन्द करने में व्यस्त हो गया—

और मेरे आदमी, नोटों को संभालने में—
इस सारी प्रक्रिया में सिर्फ तीन मिनट लगे होंगे।
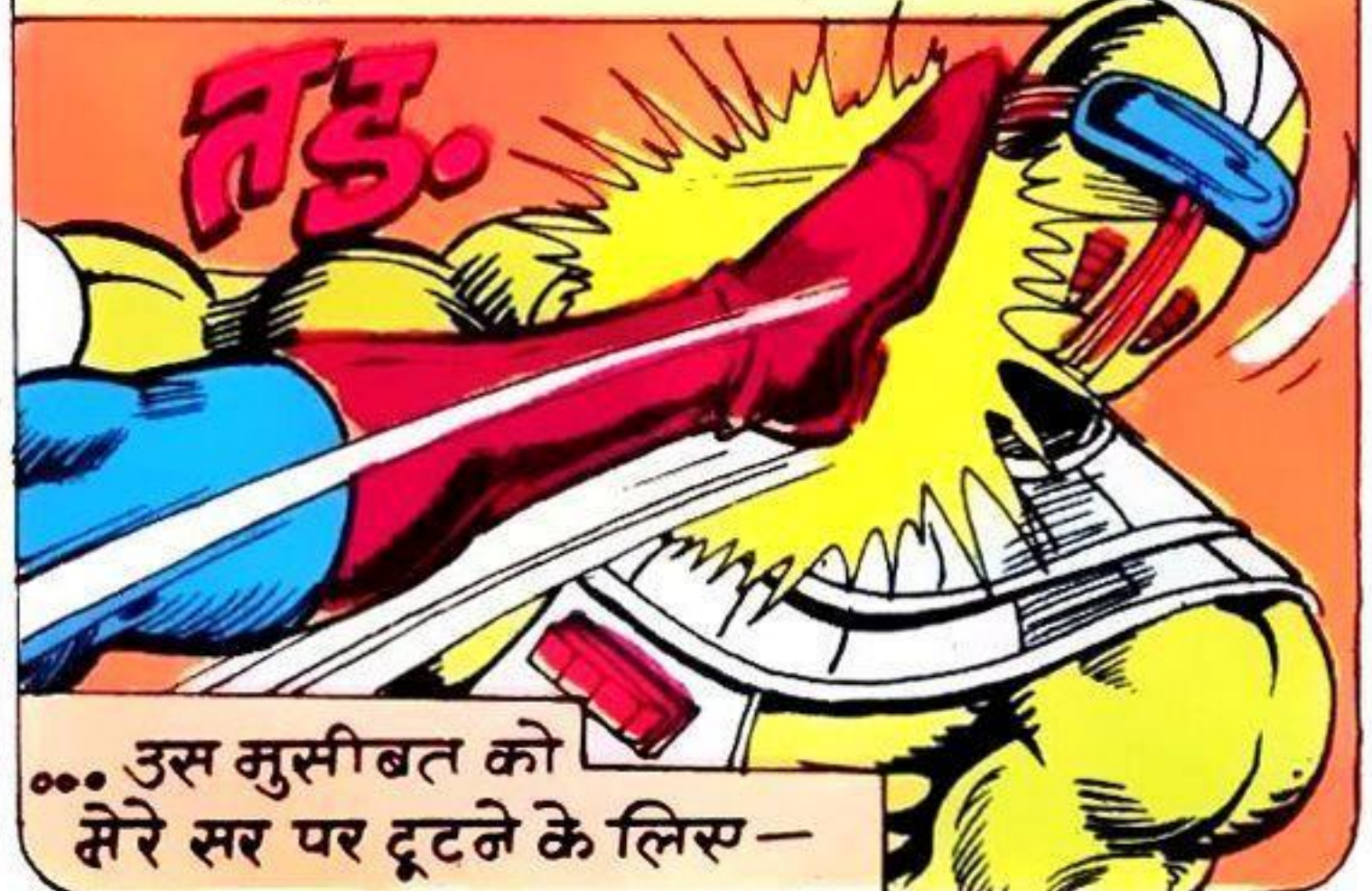
लेकिन इतना समय शायद काफी था...
तड़
...उस मुसीबत को मेरे सर पर टूटने के लिए—

यह मैं कभी नहीं समझ पाया, कि सुपर कमांडो ध्रुव हर घटना-स्थल पर इतनी जल्दी कैसे पहुंच जाता है।
हां, ध्वनिराज!
इस बार भी नहीं समझ पाया —
सुपर कमांडो ध्रुव!
इसीलिए इस बार मैं ऐसा इंतजाम करूंगा, कि तुम बूढ़े होने से पहले, नारका जेल से बाहर न निकल सको।
तुम नारका जेल में दो साल रहकर भी सुधर नहीं सके।
ध्रुव एक आश्चर्यजनक इंसान था। फुर्तीला, शक्तिशाली और बुद्धिमान!
विपरीत परिस्थितियों में भी मौत को धकाने वाला इंसान...
...लेकिन था तो फिर भी वह एक इंसान ही—
फायर!
मेरा ख्याल गलत था।
वह इंसान नहीं था।

कोई भी इंसान गोलियों की उस बौछार से बच नहीं सकता—
तड़तड़तड़तड़तड़तड़तड़तड़तड़
तड़
कड़
धाड़
तड़
धाड़
गोलियां एक बार चलनी जो बन्द हुई—
धड़ाक
तो फिर न चल पाई—
धड़ाक
धक
बंदूकें हाथों से छूट चुकी थीं—
और गोलियों की जगह, अब ध्रुव के वार, हवा में उड़ रहे थे—
धाड़

कुछ क्षणों तक मैं भी भौचक्का-सा उस अद्भुत फाइटर के बिजली जैसे वारों को देखता रह गया —

मैं समझ गया था कि मेरे पास, पैसे लेकर भागने के लिए सिर्फ एक मिनट का समय है...

...क्योंकि मेरे आदमी इससे ज्यादा देर तक ध्रुव के सामने नहीं टिक सकते —

मेरा ख्याल फिर गलत था —

मेरे आदमी सिर्फ तेइस सेकंड तक ठहर सके —

धाड़

जरा सुनो तो ध्वनिराज!

तुम्हारे खाते में जितना पैसा है, उससे कहीं ज्यादा तुम निकाल कर ले जा रहे हो!

धम

आह!

अब पुलिस के यहां पर आने तक तुम चुपचाप पड़े...

धम

इससे ज्यादा वह न बोल सका —

— क्योंकि मेरी, 'बैकअप यूनिट' तैयार थी —
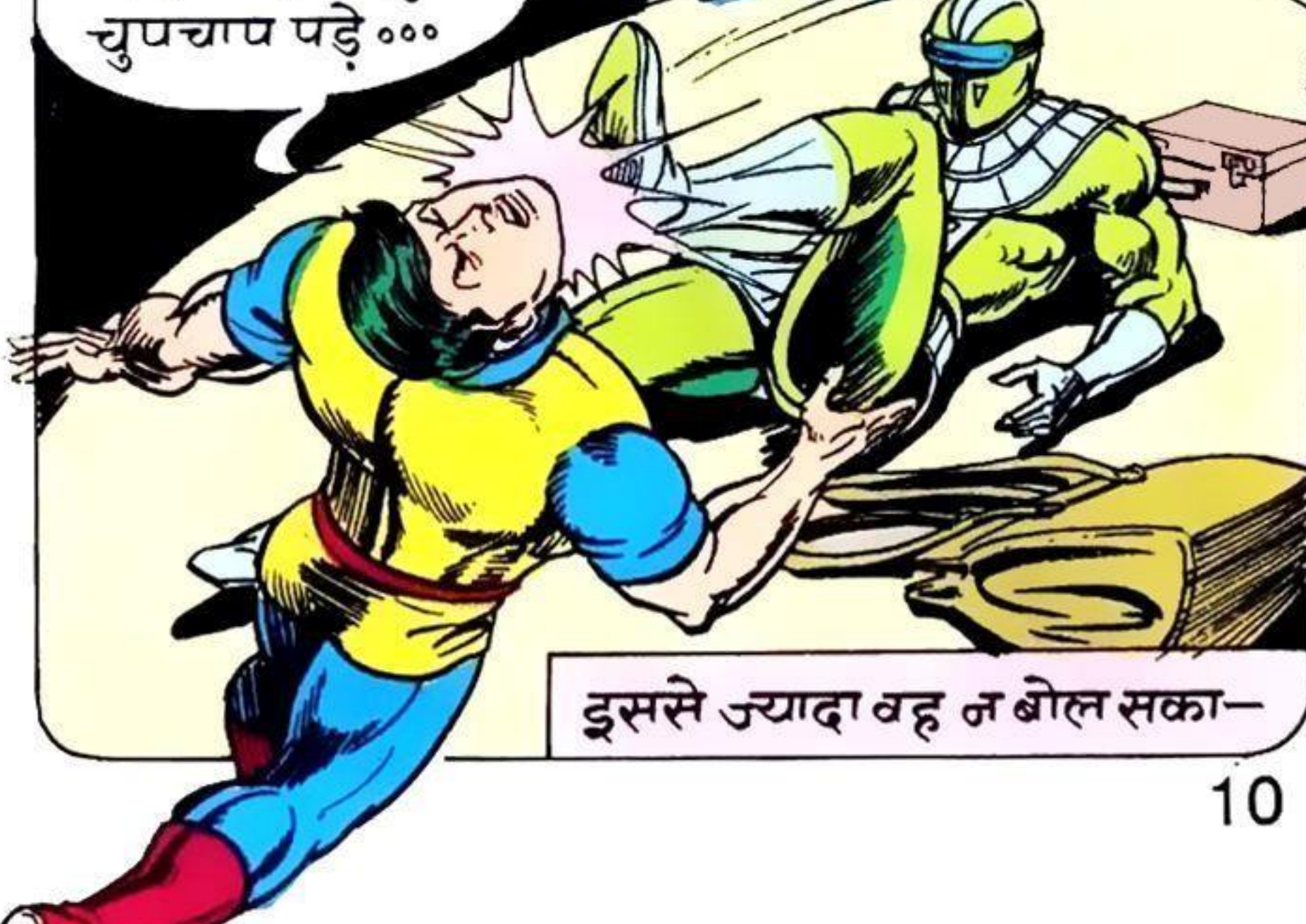
और जब तक यह 'वायुसेना' मेरे पास थी, तब तक मुझे कोई छू भी नहीं सकता था—

और नाही कोई इस 'वायुसेना' के हमले से बच सकता था—

सुपर कमांडो ध्रुव भी नहीं—

वह तो उसकी किस्मत अच्छी थी कि पहला ब्लास्ट, उसको पूरी तरह से नहीं लग पाया—

और दूसरे वार को उसने अपने तक पहुंचने नहीं दिया—

परन्तु लाख कोशिशों के बाद भी ध्रुव मेरे अल्ट्रासोनिक चमगादड़ों से बच नहीं सकता था—

क्योंकि चमगादड़ों की तादाद ज्यादा थी—

और वे हर तरफ से हमला कर रहे थे।
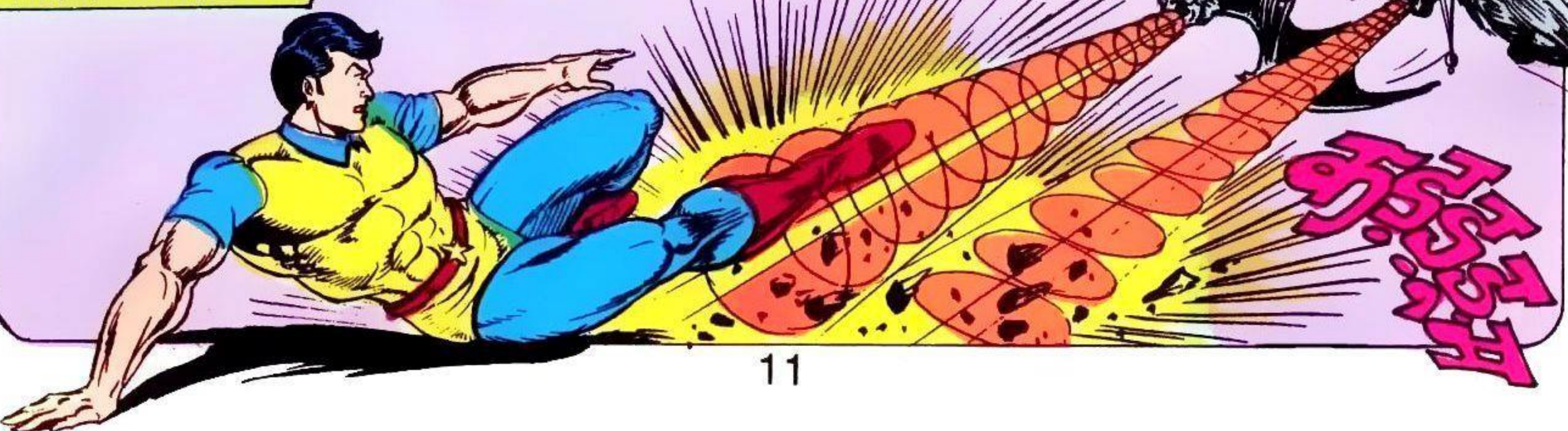
ध्रुव जैसा विलक्षण योद्धा भी कुछ देर तक तो उनका सामना कर सकता था—
लेकिन इस बार उसकी मौत निश्चित थी—
आऽऽह्ह
कड़ड़ड़
दिल तो यही चाहता था कि मैं वहां पर रुककर, ध्रुव की मौत का दिलकश नज़ारा देख सकूं—
लेकिन मेरे पास उस सुनहरे दृश्य को देखने का वक्त नहीं था।
अब पुलिस किसी भी समय वहां पर आ सकती थी—
मेरे आदमी भी होश में आ गए थे —
... मैं पैसा लेकर बैंक से भाग निकला।
और अपने 'अल्ट्रासोनिक लांचर' को बनाने की तैयारी में जुट गया।
लेकिन, श्रीमान ध्वनिराज, आपने अपने लिखित बयान में तो श्रीमान ध्रुव को मारने का कोई और तरीका लिखा था।
हां, दरअसल आगे की कहानी मुझे बाद में मालूम हुई...
अपने उस आदमी की जुबानी, जो टांग टूट जाने की वजह से बैंक से भाग नहीं पाया था...
...और जिसे पुलिस ने पकड़ लिया था।
ओह, समझा! आगे सुनाइए।
मेरी चमगादड़ों की फौज का हमला तो भीषण था ही—
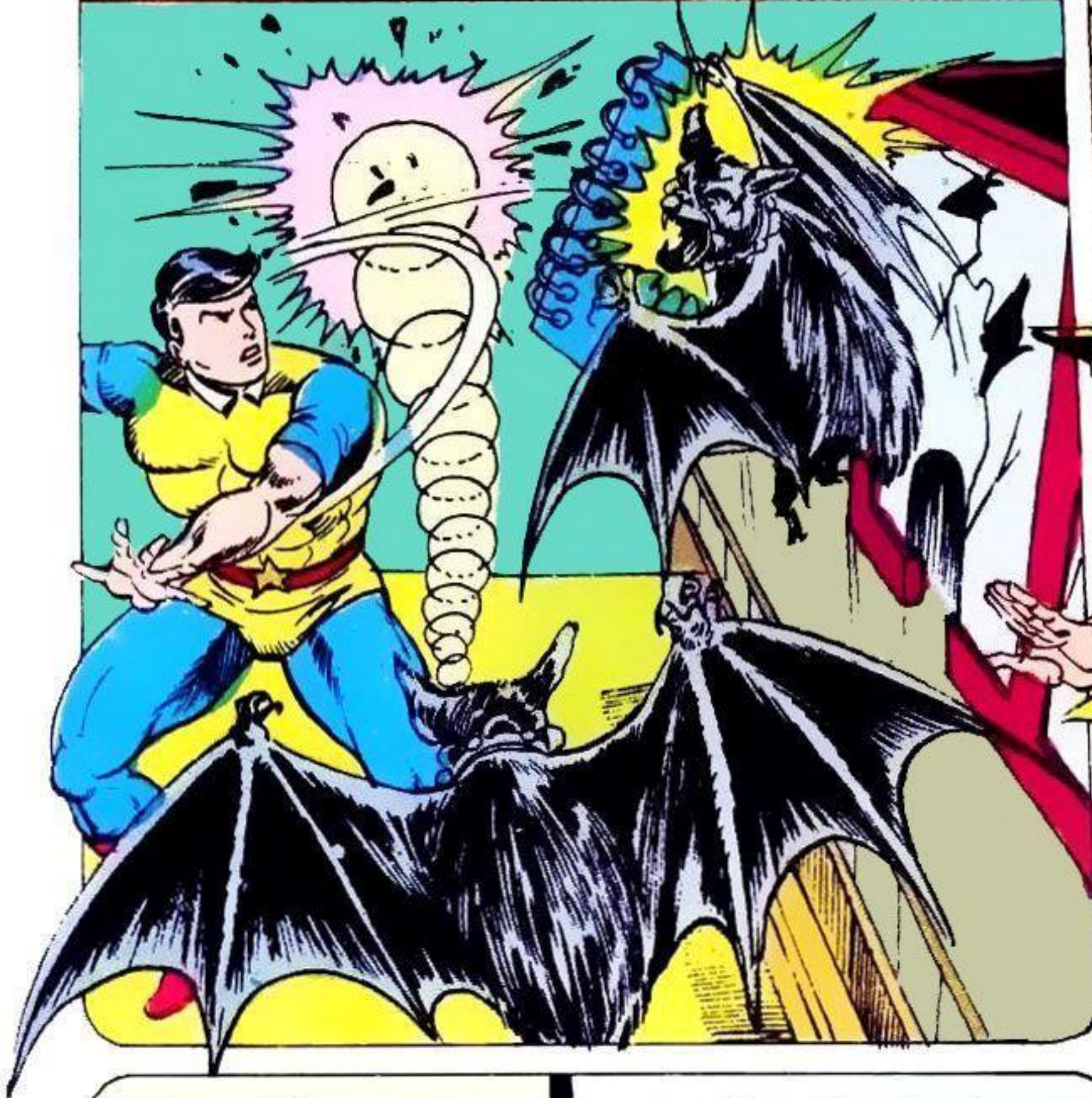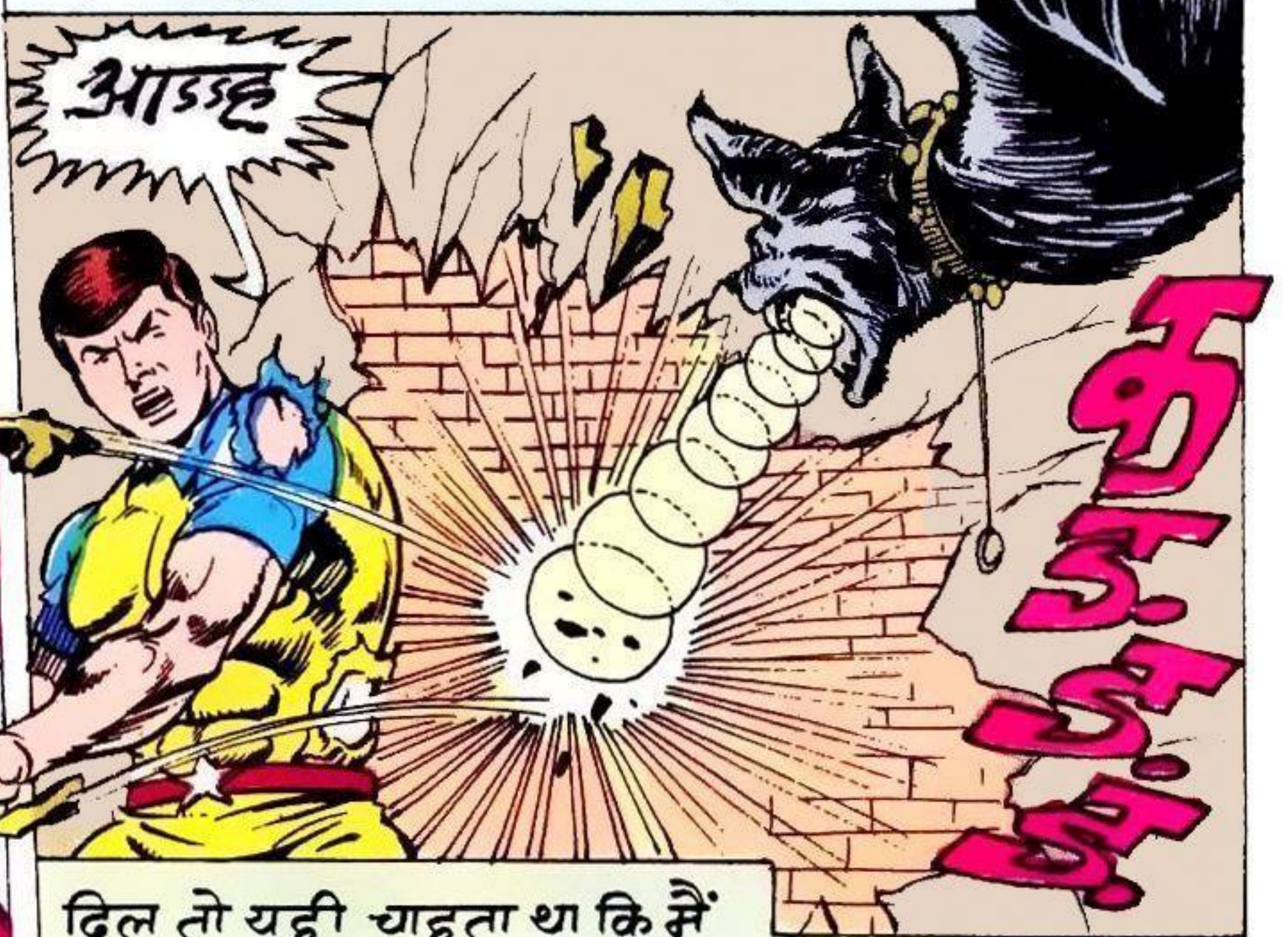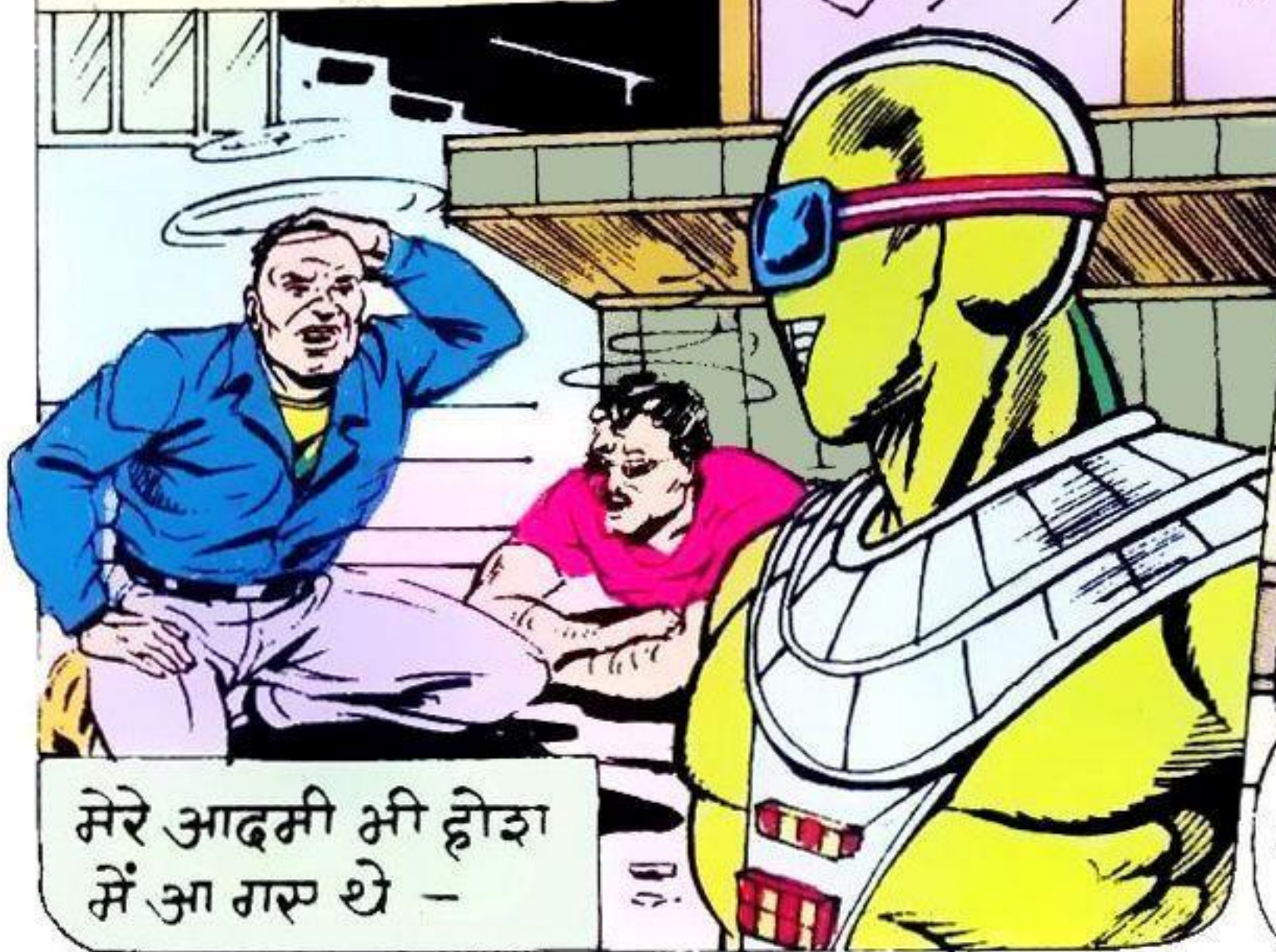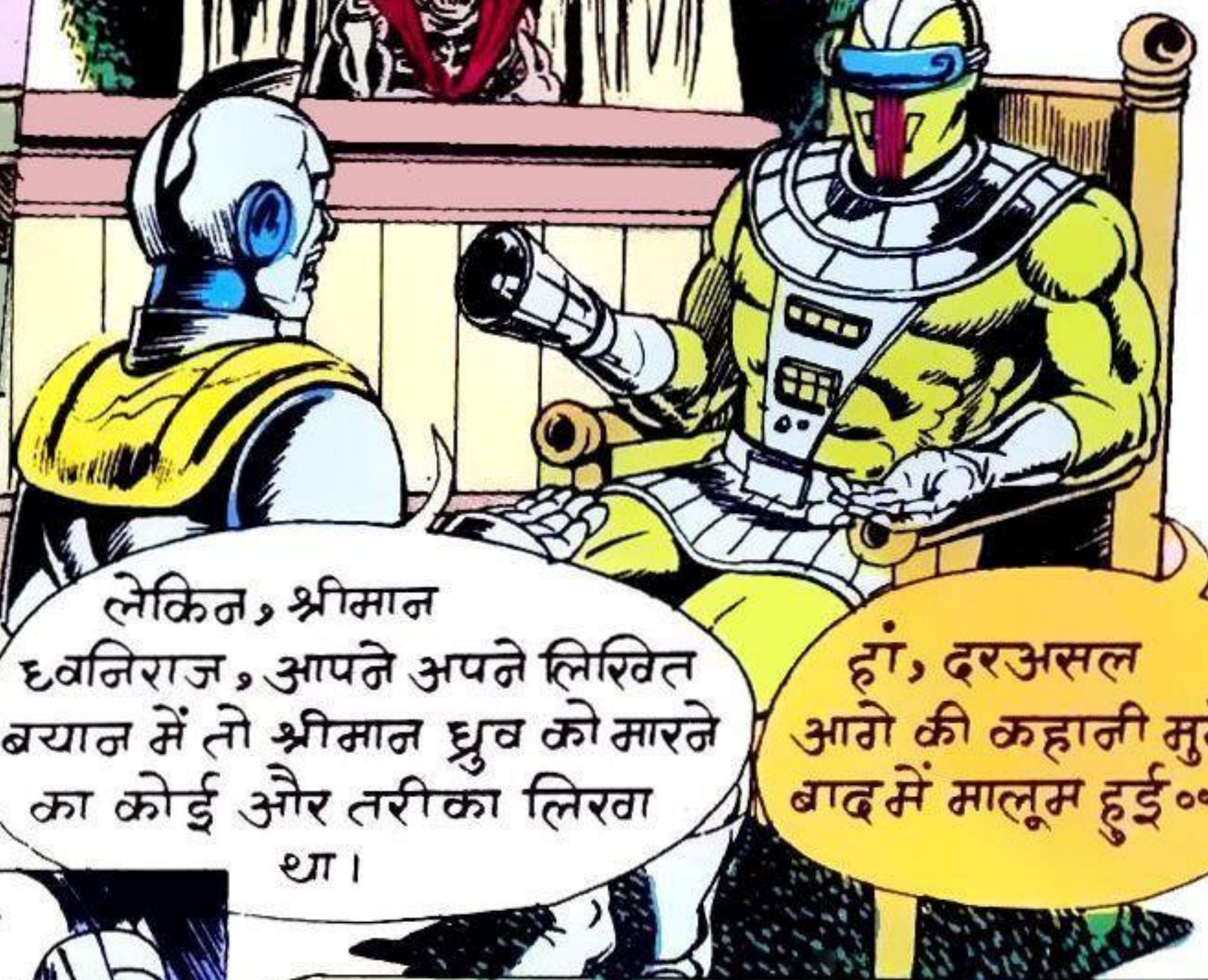
लेकिन उनका मुकाबला करने वाला भी उतना ही भीषण था –
कभी ध्रुव, चमगादड़ों पर भारी पड़ जाता –
और कभी चमगादड़ ध्रुव पर हावी हो जाते –
ओफ्‌ ! ये तो हर तरफ से हमला कर रहे हैं ।
उसके कपड़ों के चिथड़ों में से उसका बदन झांक रहा था –
खून के लाल धब्बे, पीली और नीली पोशाक पर चमक रहे थे –
और मैं हर तरफ के हमले से बच नहीं सकता !
ध्रुव की मौत, उसके सिर पर तांडव कर रही थी !
बचने का एक ही रास्ता है !
अगले पल जो हुआ –
– उसको देखकर मेरे आदमी की आंखें फटी की फटी रह गईं ।
दाद दे उठा वह अपनी टांग तोड़ने वाले के दिमाग की –
ध्रुव ने बिजली की-सी फुर्ती से उछलकर एक चमगादड़ को दबोच लिया था –
इन शैतानों से अगर कोई निपट सकता है...

...तो सिर्फ इन जैसे दूसरे शैतान!
ध्रुव के शक्तिशाली हाथ, चमगादड़ के परों को मोड़ते चले गए—
चमगादड़ के गले से, एक बेआवाज़ अल्ट्रासोनिक चीख उबलती चली गई।
और हर बेआवाज की चीख के साथ, ध्रुव का शरीर भी घूमता चला गया—
फटट
फटट
फचाक
खचाक
अल्ट्रासोनिक चीखों के ब्लास्ट, चमगादड़ों के शरीरों के चिथड़े, उड़ाते चले गए।
और कुछ ही पलों में मैदान साफ हो गया।
मेरा दुश्मन, एक बार फिर जीत गया था।
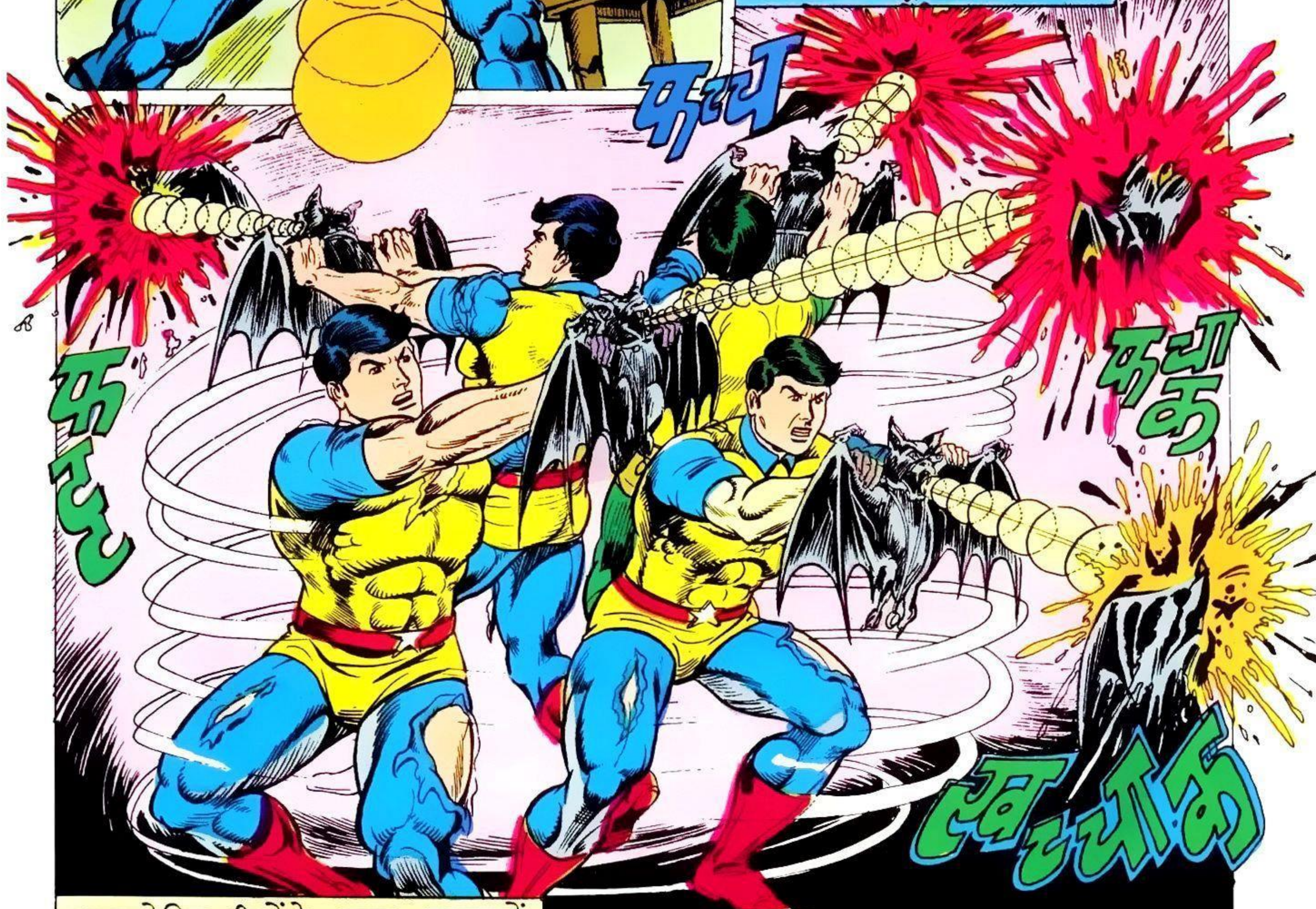
पर यह जीत अधूरी थी। क्योंकि वह न तो मुझे पैसा लेकर भागने से रोक पाया था ...
... और न ही 'अल्ट्रासोनिक लांचर' बनाने से।... पैसे अगर भरपूर हों, तो काम बहुत जल्दी होता है।
मेरा 'लांचर' तैयार होने में एक हफ्ता भी नहीं लगा।
अब सामने, सबसे बड़ा सवाल यह था कि ...
आप इस 'अल्ट्रासोनिक लांचर' को फिट कहां पर करेंगे, ध्वनिराज?
यही तो सोचने की बात है, लालारुख!
मैं इसको कहीं पर भी फिट करूं, वह शैतान का बच्चा ध्रुव फिर भी इसका पता लगा ही लेगा ...
... और फिर ये भी किसी कबाड़घर में पड़ा मिलेगा।
इसको किसी ऐसी जगह फिट करना होगा, ताकि ध्रुव इस तक पहुंच ही न ...
भारत का दोहरा अंतरिक्ष कार्यक्रम सेटेलाइट का प्रक्षेपण पहला भारतीय चांद पर
मिल गई! मिल गई! लांचर को फिट करने की जगह!
इस लांचर को मैं सेटेलाइट यानी उपग्रह में चुपचाप फिट कर दूंगा, लालारुख!
ताकि मैं अंतरिक्ष से पूरी दुनिया को इसके निशाने पर ले सकूं।
वह 'सेटेलाइट' तो यहीं राजनगर के 'स्पेस-सेंटर' में रखी है। लेकिन उस तक पहुंच पाना असंभव है। पहरा बहुत सख्त है।
क्योंकि 'सेटेलाइट' के साथ-साथ वहां पर चांद पर जाने वाले पहले भारतीय की ट्रेनिंग भी चल रही है।
उस सुरक्षा घेरे को तोड़ना ध्वनिराज के लिए बाएं हाथ का खेल है।
क्योंकि किसी को यह भनक तक नहीं है कि 'स्पेससेंटर' में आज रात ध्वनिराज आ रहा है।

स्पेस सेन्टर-
जहां पर, हर समय कड़ी सुरक्षा का घेरा बना रहता है।
लेकिन इस वक्त सुरक्षा और भी सख्त थी-
क्योंकि वहां पर चल रही दो महत्वपूर्ण योजनाओं ने स्पेस-सेन्टर का महत्व और बढ़ा दिया-
SPACE CENTRE
HIGH SECURITY ZONE
NO TRESPASSING
लेकिन उस सुरक्षा व्यवस्था को भेदना मेरे लिए बच्चों का खेल था-
किसी को यह पता नहीं था कि 'स्पेस-सेन्टर' पर आज हमला हो रहा है।
कम से कम मैं तब तक यही समझ रहा था।
और मेरी सोच न जाने क्यों हर बार गलत साबित हो रही थी-
क्योंकि तभी पूरा इलाका रोशनी से जगमगा उठा-
किसी को पहले से ही इस हमले की खबर थी।
यह क्या?
ध्वनिराज, चारों तरफ से सुरक्षा सैनिक हमारी तरफ आ रहे हैं।
जरूर कहीं पर कोई अलार्म बज उठा है।
तुम लोग सैनिकों को उलझाओ।
तब तक मैं अपना काम करके आता हूं।
मेरे आदमी सुरक्षाकर्मियों से भिड़ गए।
तड़तड़तड़तड़ तड़ तड़ तड़तड़तड़
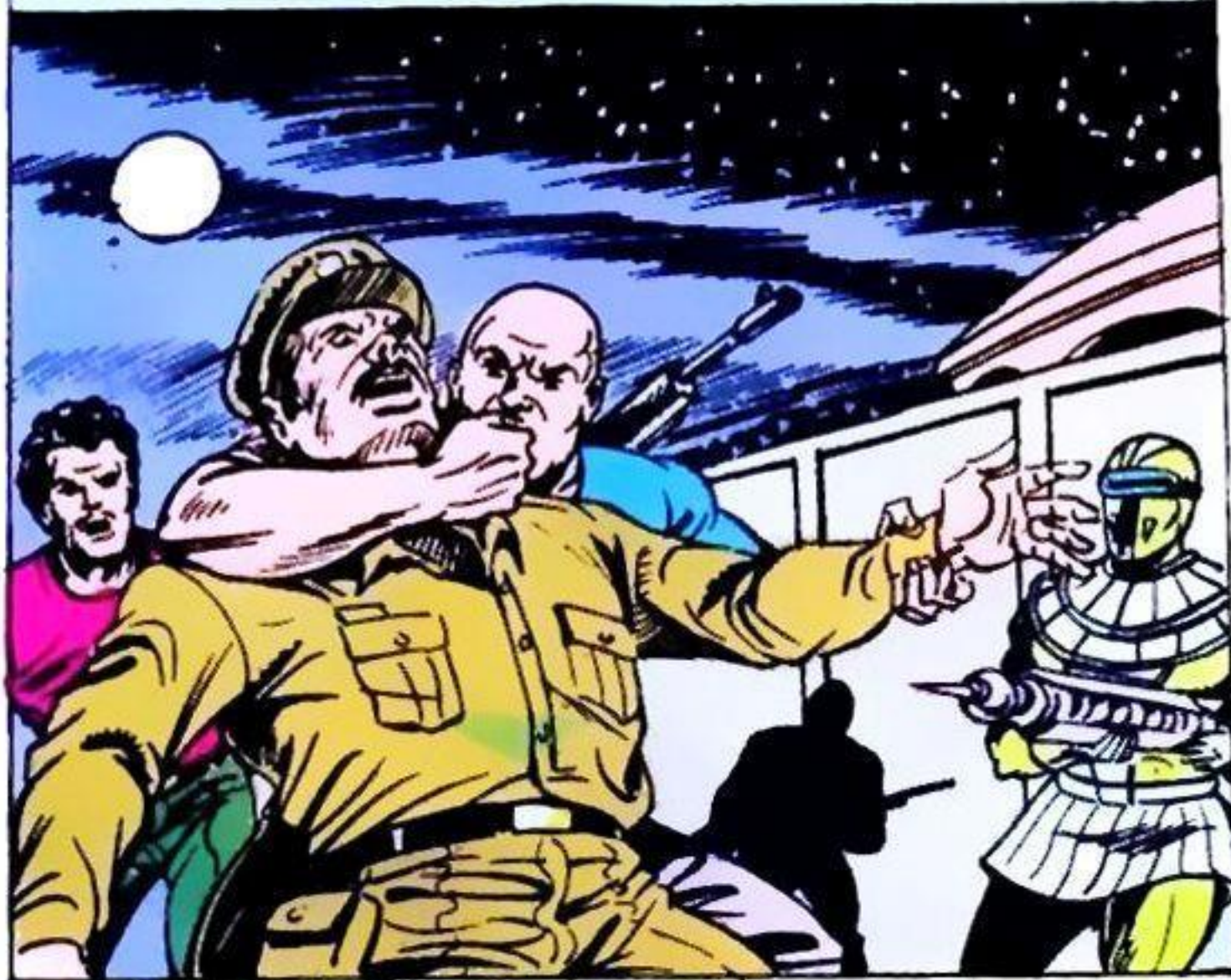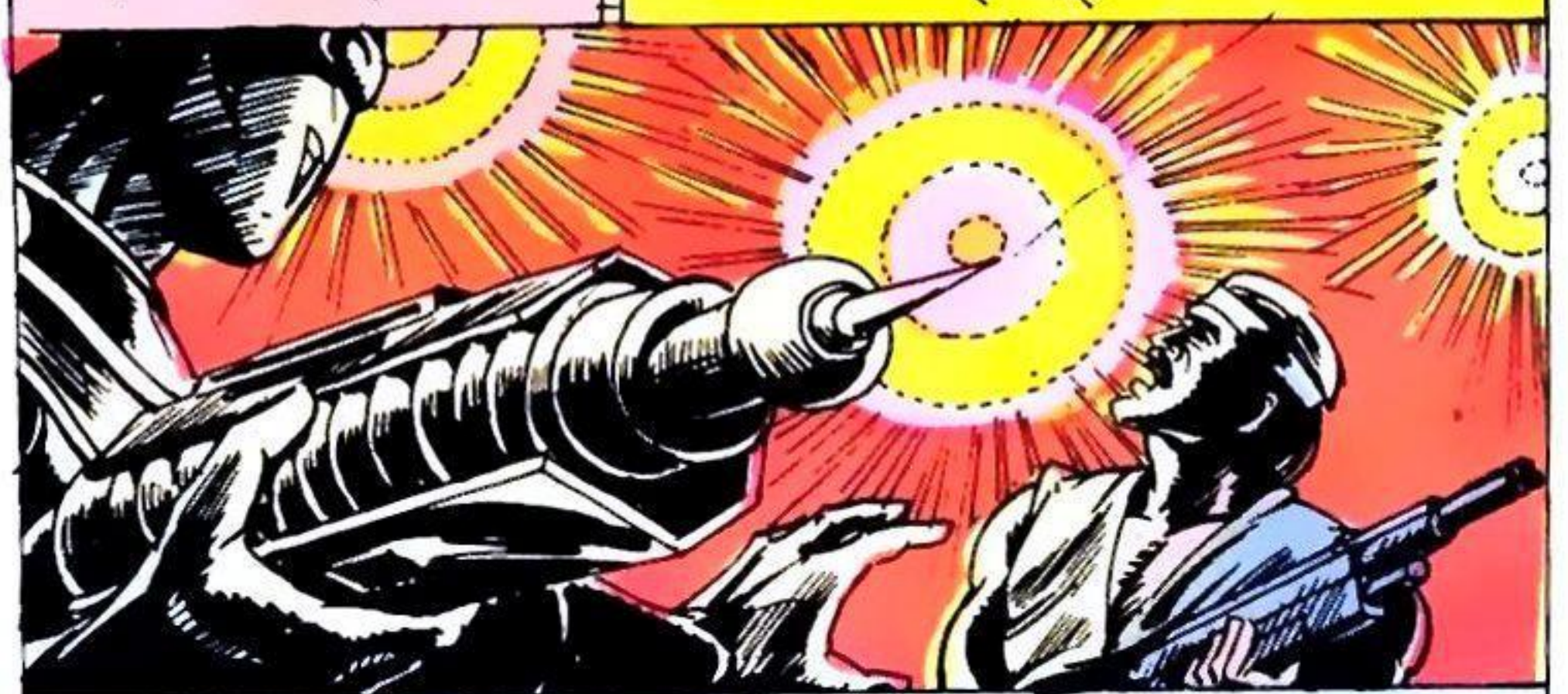
और मैं इस अफरा-तफरी का फायदा उठाकर, 'स्पेस-सेन्टर' के अन्दर भाग लिया—
घर्र्र्र्र्र्र्र्र्र्र्र्र्र्र्र
उस 'सेटेलाइट' की तलाश में, जिसमें मुझे अपना 'अल्ट्रासोनिक लांचर' फिट करना था—
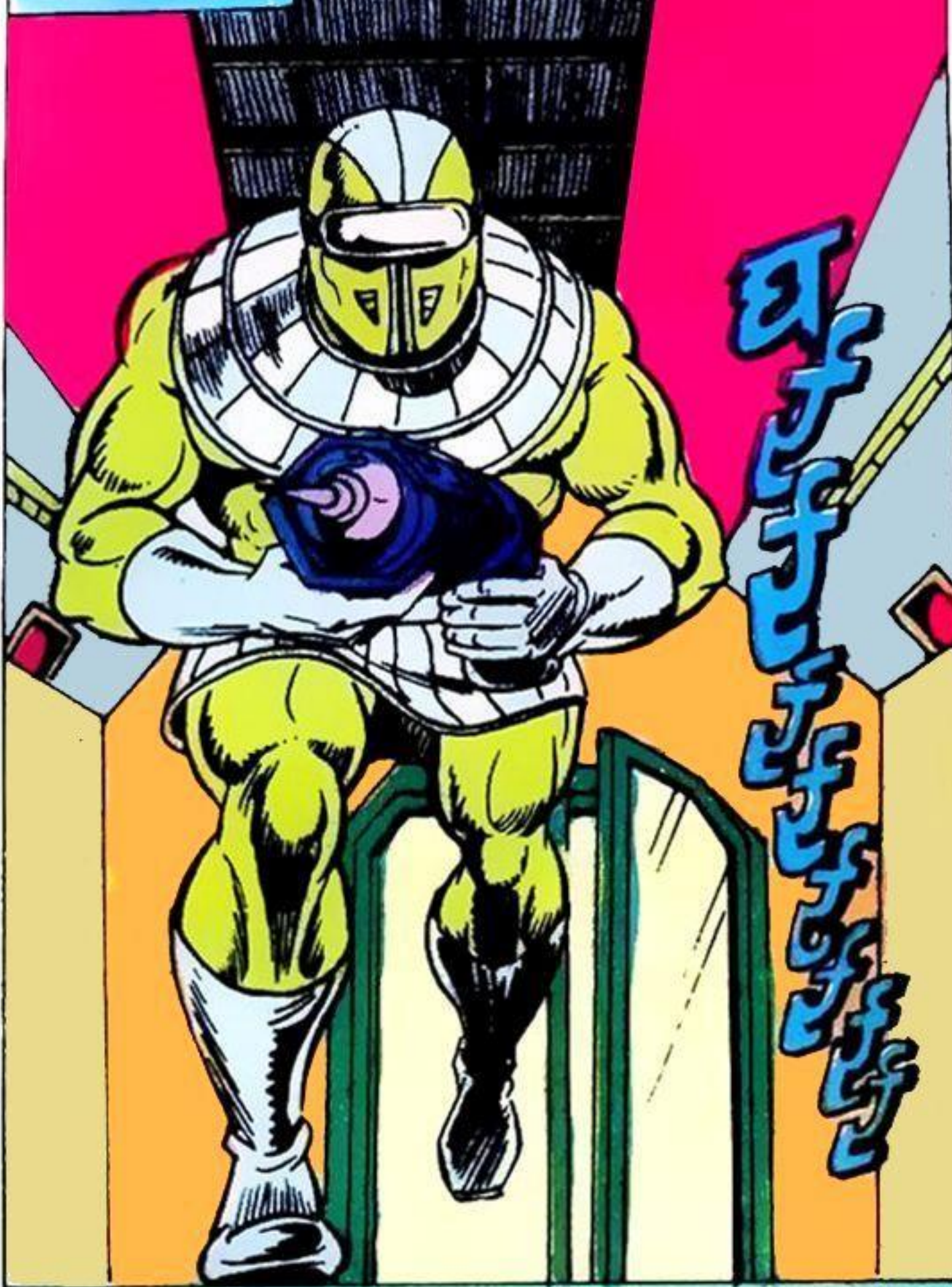
मेरी उंगली, लांचर के बटन पर, एक बार जो दबी—
सर्र्र्र्र्र्र्र्र्र्र्र्र
तो फिर हटी नहीं—
'अल्ट्रासोनिक लांचर' के तीखे ब्लास्ट, सैनिकों को तेज ब्लेड की तरह काटते चले गए।

मैंने जितनी तेजी से 'स्पेस-सूट' पहना, वह शायद 'स्पेस-सूट' पहनने का नया रिकार्ड होगा।
स्पेस सूट

अचानक मेरी नजर, एक शीशे के अन्दर पड़ी—
मैं अन्दर जाने का रास्ता ढूंढने लगा—
दरवाज़ा मिल गया—
चेतावनी स्पेस सूट पहनकर ही अंदर जाएं
सेटेलाइट! सेटेलाइट सामने चमक रही थी।
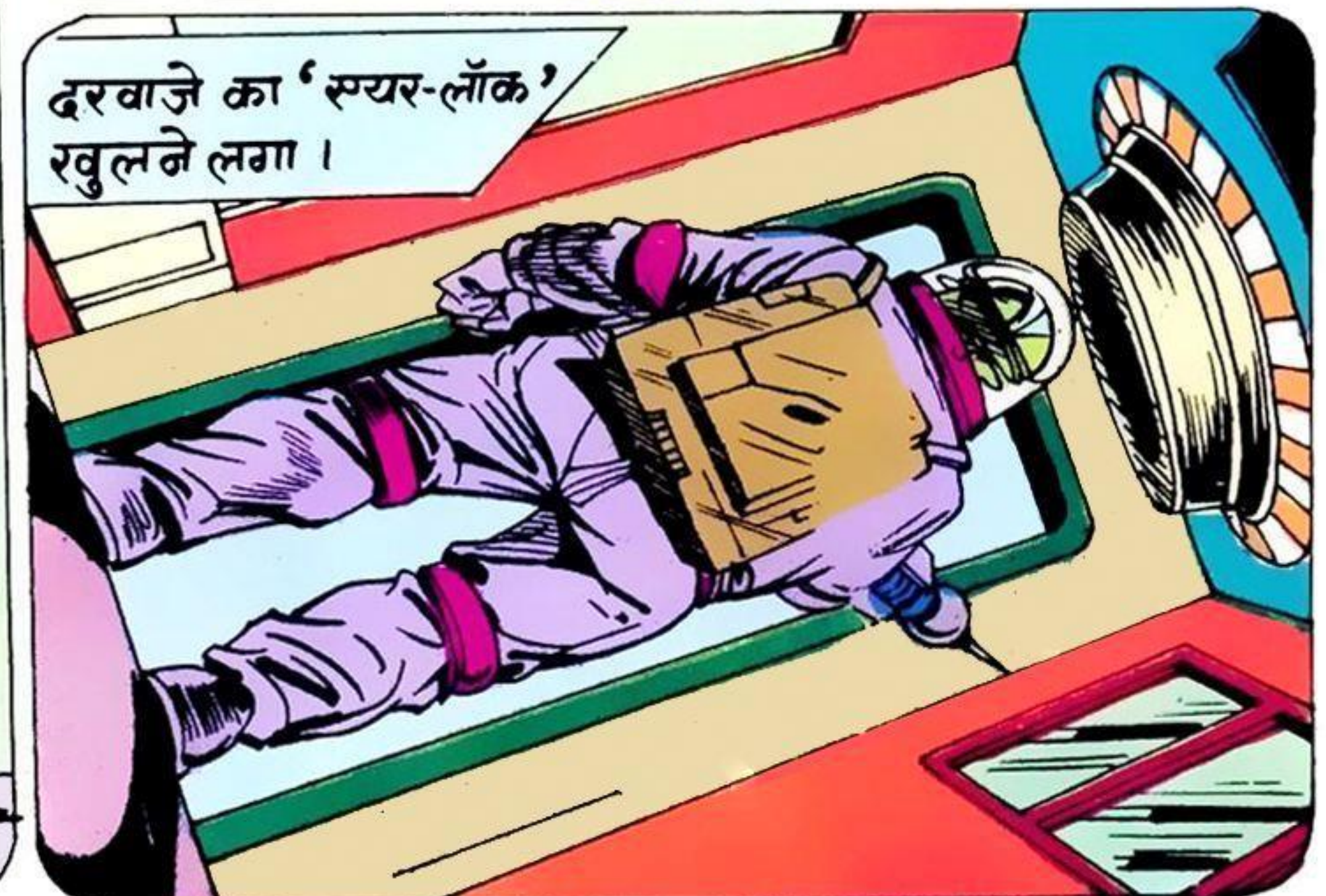
दरवाज़े का 'एयर-लॉक' खुलने लगा।

सेटेलाइट! सेटेलाइट कहां गई?

बाहर से तो यहीं पर रखी दिख रही थी।

तभी मेरे 'स्पेस-सूट' में लगे 'रेडियोफोन' पर एक सर्द आवाज गूंज उठी-

वह सेटेलाइट नहीं, सेटेलाइट का प्रक्षेपित चित्र था ध्वनिराज!

घूमते ही मेरी नजरें जिस पर पड़ीं, उसको देखकर मेरी रीढ़ की हड्डी तक सर्द हो उठी-

सुपर कमांडो ध्रुव!

तुम यहां पर कैसे?

मुझे तुम्हारी हर एक चाल का पहले से ही पता था ध्वनिराज!

...पर मैं तुमको यहां पर रंगे हाथों ही पकड़ना चाहता था।

तुम... तुमको कैसे पता था?

उस चमगादड़ के जरिए, जो मैंने बैंक में पकड़ा था।

उस पर एक 'माइक्रो ट्रांसमीटर' चिपकाकर मैंने उसे छोड़ दिया था! मुझे मालूम था कि उड़कर वह अपने घर ही वापस जाएगा! उसका घर यानी तुम्हारा अड्डा।

और उस ट्रांसमीटर के जरिए तुम्हारी हर एक बात, मेरे कमांडो हैडक्वार्टर के ट्रांसमीटर पर रिसीव हो रही थी।

और अब मैं उस काम को पूरा करूंगा, जो बैंक में अधूरा छूट गया था।
वह मुझसे कई मीटर की दूरी पर खड़ा हुआ था—
मैं समझ नहीं पाया कि एकाएक इतनी लंबी छलांग उसने कैसे लगा दी?
आई sss! क्या ध्रुव में कोई 'सुपर-पॉवर' आ गई है?
ओह समझा! यह लेबोरेट्री चांद का प्रतिरूप है! इसीलिए यहां की गुरुत्वाकर्षण शक्ति भी चांद जैसी ही है०००
...पृथ्वी की गुरुत्वाकर्षण शक्ति का छठा भाग।
इसका मतलब यह हुआ कि मैं भी ऐसी छलांग... उई sss
मैं संभल भी न पाया था, कि मुझ पर दूसरी टक्कर आ लगी—
'अल्ट्रासोनिक लांचर' मेरे हाथ से छूटकर दूर जा गिरा—
और मेरा बदन, उस वैक्यूम में उड़ता हुआ, चट्टानों से जा टकराया—
ओफ्! अगर मेरे स्पेस-सूट में, नुकीली चट्टानों से एक छेद भी हो गया०००
००० तो इस वैक्यूम में मेरे शरीर के चिथड़े उड़ जाएंगे!
लांचर को सेटेलाइट में फिट करने का मेरा प्लान तो धूल में मिल ही चुका था—
लेकिन उसके साथ-साथ मैंने, ध्रुव को भी, उसी कृत्रिम चांद की धूल में मिलाने की ठान ली थी—
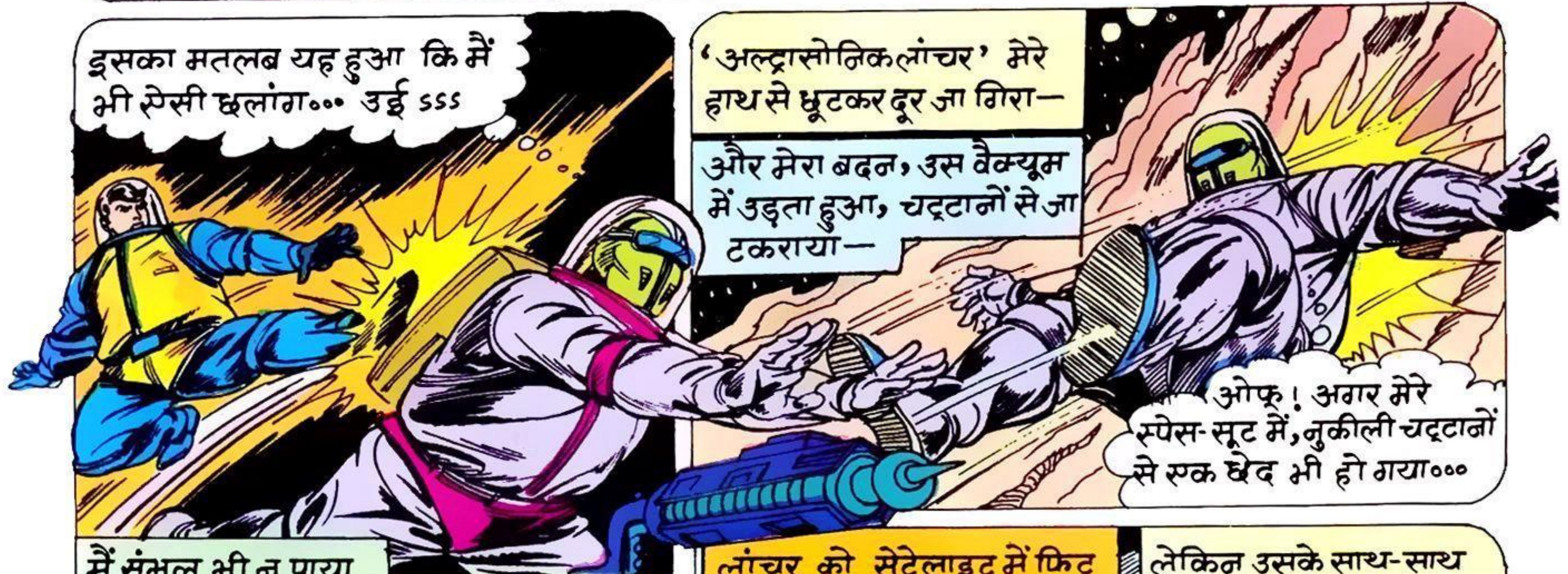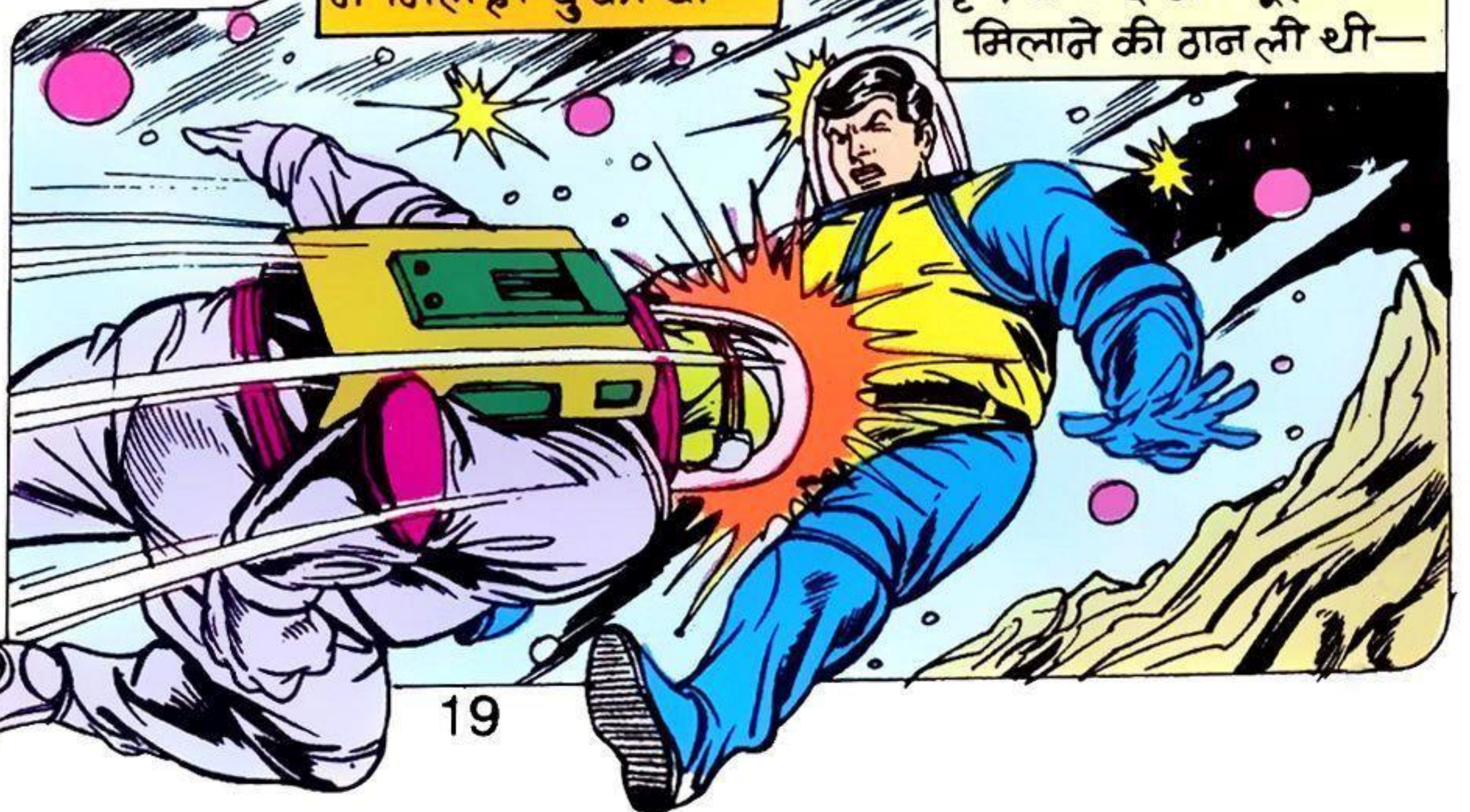
मेरे सिर पर पागलपन सवार हो चुका था ।
मेरे हाथ मशीन की तरह चल रहे थे ।
और हथौड़े की तरह वार कर रहे थे—
लेकिन ध्रुव की भीसारी जिन्दगी, इन्हीं दांव-पेंचों के साथ गुजरी थी ।
मैं उससे सीधी फाइट में कभी नहीं जीत सकता था ।
अब अगर तुमने जरा सी भी हरकत की, तो यह नुकीला पत्थर तुम्हारे स्पेस सूट में घुस जाएगा, ध्वनिराज !
और उसके बाद तुम जानते ही हो, कि क्या होगा!
मैं हार मानने ही वाला था, कि तभी मेरी नजर एक चीज पर पड़ी ।
और मैंने एक जबर्दस्त खतरा मोल ले ही लिया ।
अल्ट्रासोनिक लांचर मेरे हाथ में आ गया ।
और इस बार मैं नहीं झिझका ।
मेरे हाथ, बटनों पर दबते चले गए ।
और मेरा 'अल्ट्रासोनिक ब्लास्ट' ध्रुव के स्पेससूट में छेद करता हुआ, पीछे चट्टानों से जा टकराया—

मेरे 'स्पेस-सूट' के रेडियो पर एक चीख गूंज उठी—
सुपर कमांडो ध्रुव की आखिरी चीख—
पहले उसके 'स्पेस-सूट' के चिथड़े उड़े...
...और फिर उसकी नसों में दौड़ता खून, अपने 'रक्त-दाब' के कारण, नसों को फाड़कर बाहर टपकने लगा—
उसके पूरे बदन की नसें, गुब्बारे की तरह फट रही थीं—
कुछ देर तक तो, फिर भी, वह जांबाज सीधा खड़ा रहा... और फिर उसके मुंह से, खून की एक तेज उल्टी उबली—
और धीमी गति से गिरता उसका शरीर—
उस कृत्रिम चांद की सतह से जा टकराया—
ध्रुव का बदन, मेरे दुश्मन का बदन, अपने ही खून में सराबोर, मेरे सामने मृत पड़ा हुआ था।
इससे ज्यादा खूबसूरत दृश्य मैंने अपनी जिंदगी में कभी नहीं देखा—
कभी नहीं—

फिर अपना 'लांचर' तान कर लाशें बिछाता हुआ, मैं बाहर भाग लिया!
जो काम, मैं सोचकर 'स्पेस-सेंटर' गया था, उससे कई गुना बड़ा काम मेरे हाथों से हो गया था। 'सुपर कमांडो ध्रुव' मेरे हाथों से मारा जा चुका था।
कुछ पलों तक कोर्ट में सन्नाटा छाया रहा-
और फिर- रोबोट के गले से एक हल्की सी खरखराहट उभरी-
स्वामी कंकालतंत्र! इनकी बैंक डकैती एवं स्पेस-सेंटर पर हमले की कथा तो सच है...
ये घटनाएं, पृथ्वी के कई समाचार माध्यमों में आई थीं...
...पर इनका श्रीमान ध्रुव को मारने का दावा झूठा है।
मेरा... मेरा दावा झूठा है? क्या बकता है, टीन के डिब्बे? अभी तेरा पुर्जा-पुर्जा हवा में उड़ा दूंगा।
इसको तो मैं दुबारा जोड़ लूंगा,
लेकिन अगर तुम्हारा पुर्जा-पुर्जा उड़ गया तो उसे कोई नहीं जोड़ पाएगा!
बोलो बायोट्रॉन!
श्रीमान ध्वनिराज के अनुसार इन्होंने ध्रुव पर 'वैक्यूम' यानी निर्वात में पराध्वनि तरंगों से वार किया!
कोई भी ध्वनि तरंग, वैक्यूम यानी निर्वात में चल ही नहीं सकती!
इसलिए श्रीमान ध्वनिराज का दावा खारिज किया गया।
जो कि ये कर ही नहीं सकते थे।
क्योंकि 'अल्ट्रासोनिक तरंगें' ध्वनि तरंगों का ही एक रूप है। और ध्वनि तरंगों को चलने के लिए गैस, तरल या ठोस, किसी न किसी माध्यम की जरूरत पड़ती है!
झूठा!
मक्कार!
ये मारेगा ध्रुव को?
ध्रुव छींक भी दे तो ये चांद पर ही जाकर गिरेगा।
ध्वनिराज, तुम्हारा फैसला मैं बाद में करूंगा!
फिलहाल तुम 'अग्निद्वार' के उस पार जाकर इंतजार करो।
बायोट्रान, अगले गवाह महारवलनायक को बुलाओ!
महारवलनायक 'बौना वामन' कृपया गवाही देने पधारें।

मैंने मारा ध्रुव को

श्रीमान बौना वामन, आपने सुपर कमांडो ध्रुव को कैसे मारा?

वह तो बेचारा खेल-खेल में मारा गया। दरअसल मुझसे पंगा खुद ध्रुव ने लिया था।

मैं नारका जेल से भागा तो उसने मुझे दोबारा नारका जेल पहुंचा दिया! मैं दोबारा वहां से भाग निकला!

मेरा सारा 'सेटअप' खत्म हो गया था। उसे दुबारा बनाने के लिए मुझे नशीली दवाओं का घटिया धंधा करने को मजबूर होना पड़ा।

एक 'कोड-वर्ड' एक बार 'बुत' के कान में फुसफुसाने पर, एक पैकेट बुत के हाथ में आ जाता था—
नशीली दवा हेरोइन का पैकेट—
धंधा जोरों पर चल रहा था—
नोट बरस रहे थे। और किसी को जरा सा भी शक नहीं था।
Roywon
गड़बड़ बारिशों से शुरू हुई! पेड़ के अन्दर रखे, कुछ पैकेट फट भी जाते थे, और उनमें से नशीली दवाएं निकलकर पेड़ के तने द्वारा सोख ली जाती थीं।
एक तो ये गरीबी में आटा गीला हो रहा था।
और ऊपर से वह अजीबो-गरीब जंगली—
एक दिन जब मैं खुद, पेड़ के तने से, माल लेने गया हुआ था—
तो मैंने उसे देखा! वह खोखले पेड़ को कुछ इशारे कर रहा था। बुदबुदा रहा था।
पागल समझा था मैंने उसे—
लेकिन पागल वह नहीं, पेड़ हो गया था।
तड़!
और साथ-साथ शायद मैं भी—
पेड़ अपने-आप झूम-झूम कर, उस जंगली को मारने लगा—
उसके बाद तो कमाल हो गया—
जंगली ने कुछ इशारा किया—
और जमीन में लगी, छोटी-छोटी बेलों ने अपने आप तेजी से बढ़कर पेड़ को अपनी लपेट में ले लिया—

और पेड़, तेजी से हिलने लगा—
अब मुझसे नहीं रहा गया—
तड़ाक
उन पैकटों को मत छू, मूर्ख!
उस जंगली ने अपनी मौत खुद ही बुला ली थी—
मेरा वार उसको जरूर सौ किलो के हथौड़े की तरह लगा होगा।
पर उसमें गजब की जान थी—
वह गिरा तक नहीं—
ओह! तो तूने ही मेरे मित्र को नशीली दवा पिलाकर, उसे नष्ट करना चाहा था।
उसके खोखले तने से हेरोइन के पैकेट छिटककर बाहर गिरने लगे।
मेरी आंखों के सामने, मेरा करोड़ों का माल, मिट्टी में मिल रहा था—
तू शक्ल से ही दुष्ट लग रहा है!
अब तू वनपुत्र के हाथों से नहीं बचेगा!
वनपुत्र कह रहा था, वह अपने आपको—
ईयायाया!
धम्म
और पेड़ों को अपना दोस्त!
शक्ल और बातों, दोनों से ही मूर्ख लग रहा था वह मुझको—
'नंज डिपार्टमेंटल स्टोर' में रखे मेरे 'मैनेक्विन' में कुछ खराबी पैदा हो गई थी—
मेरा वह दिन वाकई खराब था!
जैसा कि मुझे अपने एक ग्राहक कौटू से बाद में पता चला—
NANZ
कांटू के 'कोड-वर्ड' फुसफुसाते ही—
उसने एक साथ कई पैकेट फर्श पर गिरा दिए।

और वह भी उस मनहूस दिन, जिस दिन वहां पर, वह शैतान का अवतार भी मौजूद था।
सुपर कमांडो ध्रुव-
यह तो ध्रुव पलक झपकते ही समझ गया, कि वे पैकेट हेरोइन से भरे हुए हैं-
पर वह यह नहीं समझ पाया कि वे पैकेट कहां से गिरे हैं।
बोल! ये सारे पैकेट तू कहां से लाया है?
किसको देने लाया है इनको, यहां पर?
पल भर के लिए तो वह नशेड़ी कांटू भी भौचक्का रह गया-
लेकिन कोई भी नशेड़ी, नशे के लिए जान भी लड़ा देता है-
और फिर पिटना तो पड़ता ही है-
खास तौर से जब सामने वाले का नाम सुपर कमांडो ध्रुव हो-
तड़ाक
तो जबान खुद-ब-खुद खुल जाती है-
कांटू ने सब कुछ उगल दिया-
देखो, भई बायोट्रान, कोशिश करना, इंसान का फर्ज है।
मेरे 'मैनेक्विन' के अंदर एक 'सुरक्षा-संयंत्र' लगा हुआ था।
और जब करारी मार पड़े-
मेरा नाम और मेरे अड्डे का पता भी-
यह बात मुझे तब तक नहीं पता थी-
तड़ाक
अब ध्रुव के हाथ, मेरा लाखों का माल लगने ही वाला था-
पर मैं एक न एक ट्रिक हमेशा बचाकर रखता हूं।
और उसका पूरा शरीर गन-मेटल में ढला हुआ था-
ध्रुव ने एक ऐसे दुश्मन को छेड़ दिया था-

जिसे ध्रुव तो नहीं मार सकता था...
ईयायाऊऊऊ
...लेकिन वह- ध्रुव की जान ले सकता था-
धाड़
खैर, मैं अपनी कहानी से भटक गया...
...फिलहाल तो मुझे अपनी जान की फ्रिक करनी थी। वह जंगली वनपुत्र मेरी जान के पीछे पड़ा था।
और मैं अपने लाखों के माल को छोड़कर भाग नहीं सकता था-
मैंने अपनी बेल्ट का एक बटन दबाया-
और मेरी बुलेटप्रूफ रबर की बनी स्पेशल पोशाक में हवा भरने लगी-
अब मुझ पर, वनपुत्र की किसी भी चाल का असर होने वाला नहीं था।
लेकिन मेरी बुलेटप्रूफ रबर की गेंद उसका मुंह जरूर तोड़ सकती थी।
धाड़
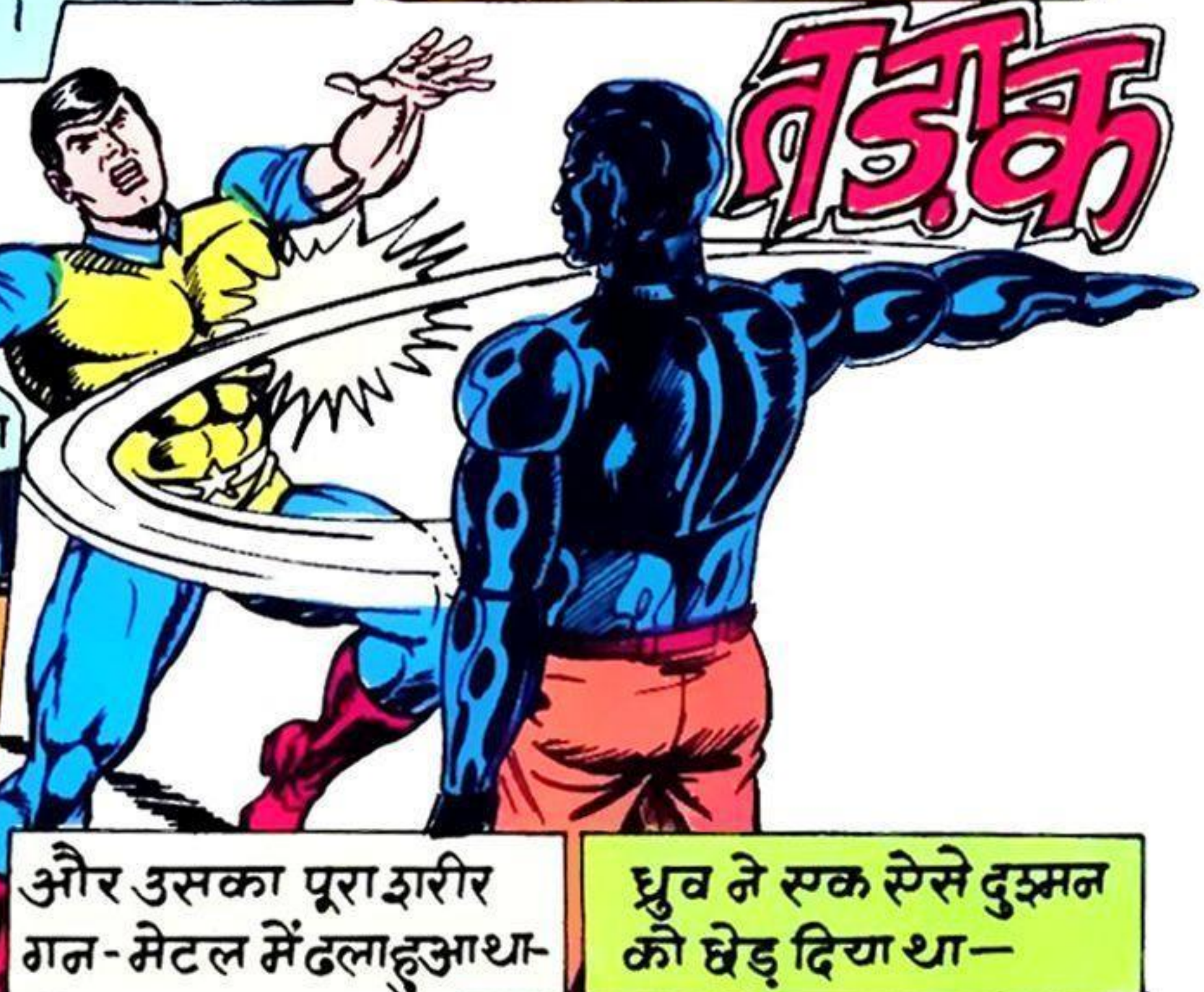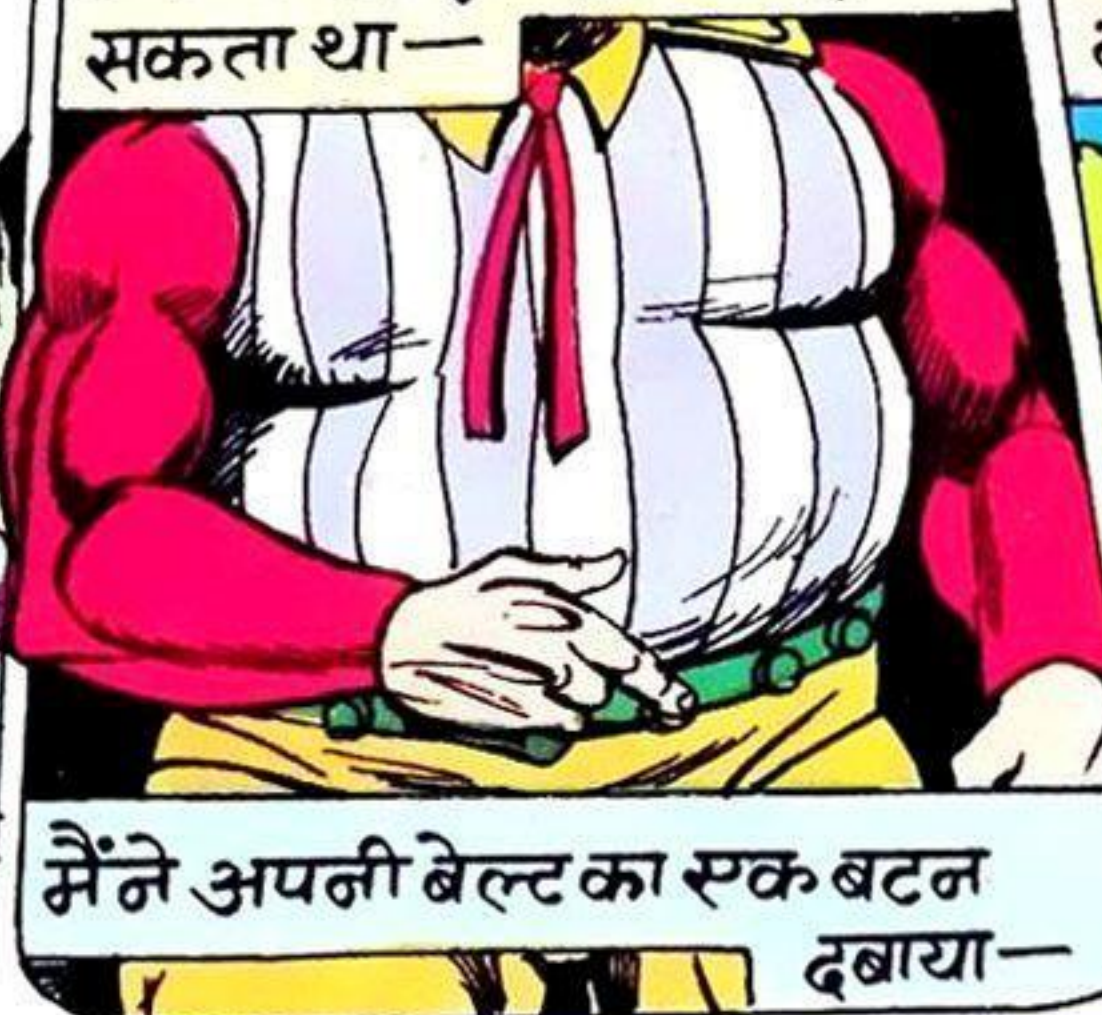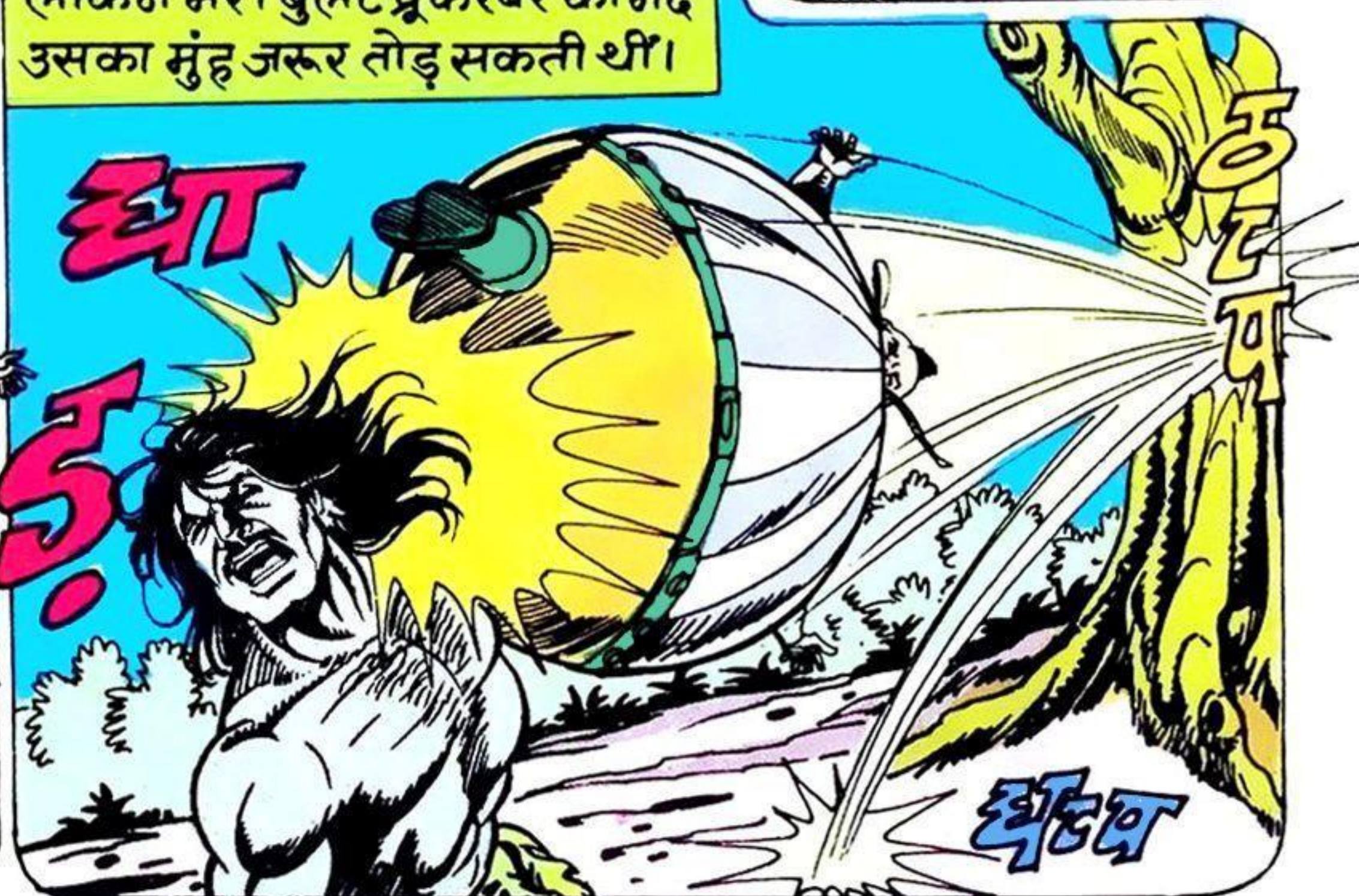
वनपुत्र ने मुझे बेलों से बांधने की भी कोशिश की—
लेकिन बेलें मुझे बांध नहीं पाईं।
फुस्स
फिस्स
फिस्स
फुस्स
क्योंकि बेलों के बांधते ही मैं हवा बाहर निकाल देता था—
और आज़ाद होते ही, वापस हवा भरकर, मेरा अटैक फिर शुरू हो जाता था—
धाड़!
कुछ ही देर में वह जंगली चकराकर गिर पड़ा—
यह बड़ी सख्त जान है। कहीं यह मेरे सारे पैकेट बटोर पाने से पहले ही होश में न आ जाए। इसे थोड़ी सी हेरोइन चखवा दूं।
मैंने एक पूरा पैकेट उसके मुंह में डाल दिया।
आम तौर से इतनी डोज में, एक आदमी मर जाता है।
लेकिन वनपुत्र मेरा पैकेट बटोरना खत्म होते ही, होश में आ चुका था—
पर उसका नशा अब तक मौजूद था—
अब वह और भी खतरनाक हो गया था।
भागना ही सबसे उत्तम उपाय था।
वनपुत्र ने मेरा पीछा नहीं छोड़ा था—
लेकिन कुछ ही पलों में मैंने उसको पीछे छोड़ दिया—
और राजनगर की तरफ बढ़ चला, जहां पर एक दूसरी बुरी खबर मेरा इंतजार कर रही थी—
ध्रुव, मैनेक्विन से भिड़ा हुआ था।
चाहे ध्रुव, मैनेक्विन पर वार करे...
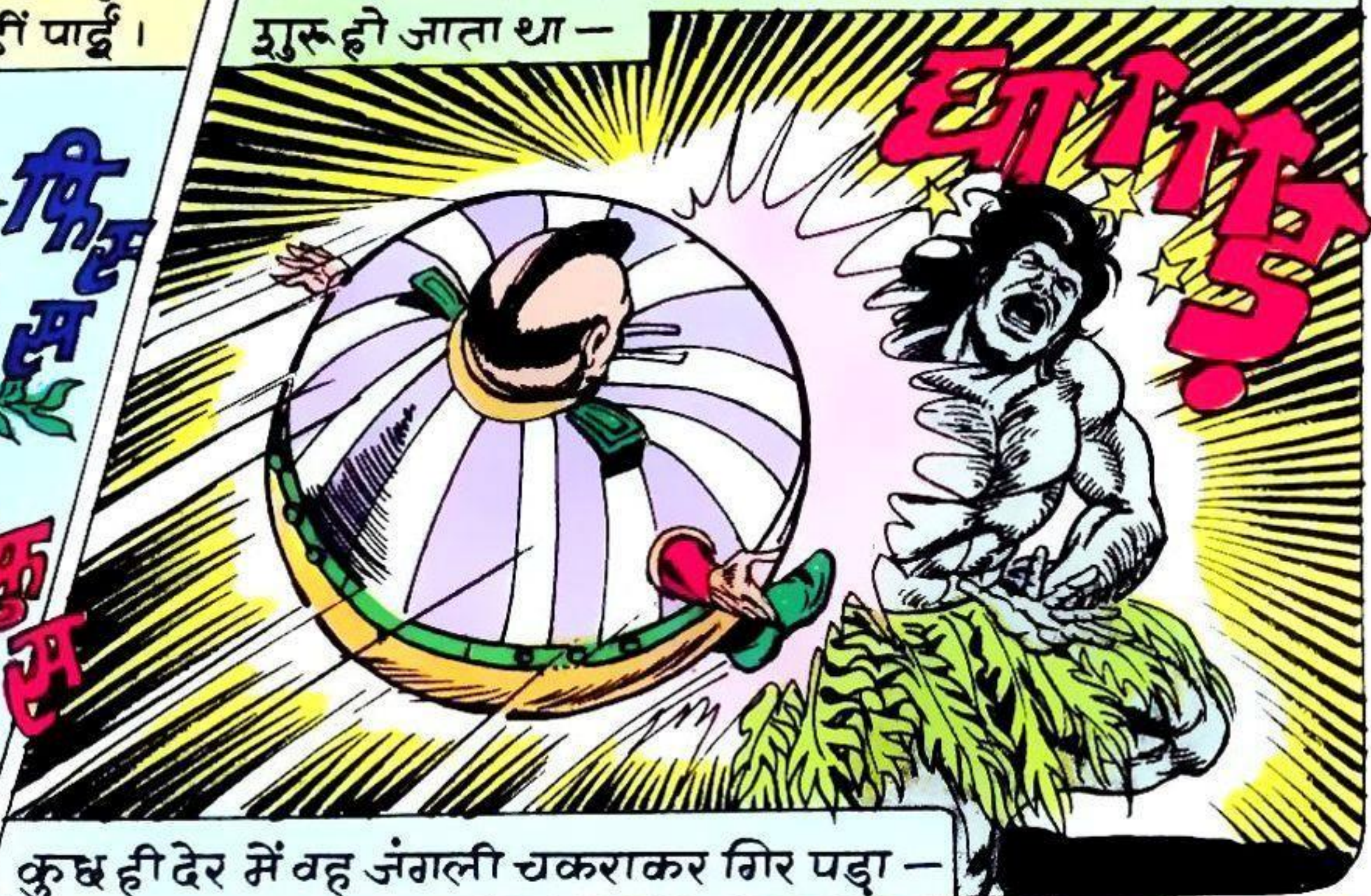
...या 'मैनेक्विन;' ध्रुव पर –
चीख, ध्रुव के मुंह से ही निकल रही थी।
यह पूरा धातु का बना हुआ है। इसलिए इस पर वार करने का मतलब अपना ही हाथ तोड़ना है।
लेकिन इस धातु के ठोस शरीर में भी एक कमजोरी है...
... इसके शरीर के अलग-अलग अंगों के जोड़।
तड़
N ANZ
रास्ता समझ में आते ही, ध्रुव ने, मैनेक्विन पर वार करना शुरू कर दिया –
अब आप चाहे मुझे बेवकूफ कहें बायोट्रॉन जी, लेकिन अगर दुश्मन सुपर कमांडो ध्रुव जैसा दिमाग वाला हो तो मुंह अपने-आप तारीफ उगलने लगता है।
कमाल का दिमाग लगाया था उसने –
कड़ाक
धाड़
हर शक्तिशाली वार के साथ-साथ मैनेक्विन का एक-एक अंग बिखरता चला जा रहा था।

कुछ ही देर में मेरे 'मैनेक्विन' के अलग-अलग अंग सड़क पर बिखरे पड़े थे।
अब कांदू को भी अपनी मौत सामने नजर आ रही थी।
लेकिन अभी मौका था—
भागने का।
वह तेजी से एक तरफ भागा—
लेकिन भाग नहीं पाया। क्यों-कि अब उसके पैर जमीन पर नहीं थे—
हिर्र!
- जंगली वनपुत्र मेरा पीछा करते-करते, राज नगर तक आ गया था—
और वह अब तक नशे में था।
उगो! बढ़ो!
तबाही फैला दो!
आगे का घटनाक्रम देखने से पहले कांदू बेहोश हो चुका था।
लेकिन तब तक मैं अपने अड्डे पर पहुंच चुका था। और वहां पूरा दृश्य मुझे अपनी विडियो स्क्रीन पर दिख रहा था।
अपने 'मैनेक्विन' की आंखों में फिट 'वीडियो कैमरे के जरिए—
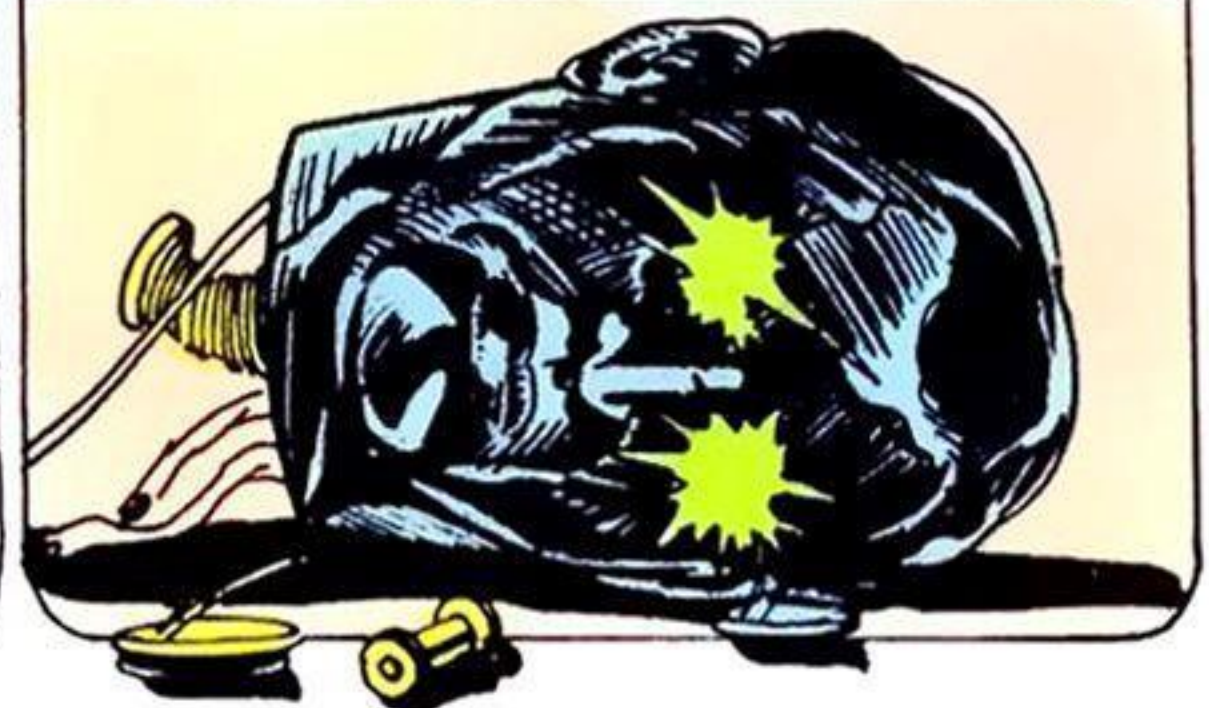
ध्रुव, शायद उस जंगली को पहले से ही जानता था।
वनपुत्र! क्या कर रहे हो? रुक जाओ!
?
लेकिन वनपुत्र तो हेरोइन के नशे में मस्त था।
वह भला, ध्रुव को क्यों पहचानने लगा—
तड़ाक
हमला!
ये मुझे उस दुष्ट बौने तक पहुंचने से रोकना चाहता है।
ओफ्!
ये इस समय होश में नहीं है! मुझे पहचान तक नहीं रहा है।
••• ऊपर से ये जड़ें मुझको बांधने के लिए, बढ़ी चली आ रही हैं।
और इन जड़ों को रोक पाने का कोई रास्ता समझ में नहीं•••
••• है! रुक रास्ता है।
अब सोचो, बायोट्रॉन जी, कि वह रास्ता क्या हो सकता था?
नहीं समझ पाए न? अरे, वह रास्ता अगर हम-तुम सोच सकते, तो हमारा नाम सुपर कमांडो ध्रुव हो जाता—
कमाल का रास्ता सोचा था पट्ठे ने—
ये जड़ें, वनपुत्र की आवाज और हाथों के इशारे का आदेश मानती हैं।
अगर मैं इन इशारों को ही रोक दूं, तो ये जड़ें अपने आप रुक जाएंगी।
नंज डिपार्टमेंटल स्टोर के शोरूम से गिरे कपड़े उठा लिए थे ध्रुव ने—
और लपक पड़ा था उस जंगली की तरफ—

जंगली था तो बहुत शक्तिशाली।
लेकिन ध्रुव में शक्ति के साथ-साथ फुर्ती भी थी।
वनपुत्र के वारों को छकाते हुए—
उसने उसके मुंह पर रुमाल कस कर बांध दिया। वनपुत्र की आवाज़ बन्द हो गई।
और इससे पहले कि वनपुत्र अपने हाथों से रुमाल हटा पाता—
ध्रुव ने उसके हाथों को, फौलादी शिकंजे में जकड़ लिया।
अब वनपुत्र बेबस था।
लेकिन यह घटनाक्रम मेरी पसन्द के विपरीत था। क्योंकि इस वक्त, वनपुत्र नशे की हालत में ध्रुव की जान ले सकता था।
और इससे ज्यादा खुशी की बात मेरे लिए, कोई हो ही नहीं सकती थी।
इसलिए मुझे तो वनपुत्र का साथ देना ही था, क्यों सही है न, भई बायोट्रॉन?
आगे बोलिए श्रीमान बौना वामन!
बड़े रूखे रोबोट हो, यार!
हां तो, मुझे वनपुत्र की मदद करनी थी।
और यह तो मैं पच्चीस बार बता चुका हूं—
कि बौना वामन एक न एक ट्रिक बचाकर रखता है।
?
मेरे 'मैनेक्विन' का हर अंग अपने आप में एक स्वतंत्र यूनिट थी।
और उन अंगों ने ध्रुव को कसकर दबोच लिया था—

बड़ी मजेदार लड़ाई हो रही थी, बायोट्रान!
ध्रुव एक अंग को दूर झटकता था, तो अगले ही पल, वह अंग उछलकर फिर उसके ऊपर वार कर बैठता था।
आऊ sss! यह 'मैनेक्विन' तो बहुत खतरनाक है।
धड़ाक
ठक
वैसे भी, अगर वह नशेड़ी मुझे न भी बताता, तो भी मैं अपने-आप समझ जाता कि ये बुत, बौना वामन के ही बनाए हुए हैं।
ऐसा काम सिर्फ वही कर सकता है।
ऐसे 'मैनेक्विन' शहर में कई जगहों पर होंगे। उनकी अलग-अलग रोक पाना असंभव है।
इनको रोकने का एक सीधा सा तरीका है, बौना वामन को ढूंढना। और उससे इन बुतों को नष्ट करवा देना।
लेकिन अभी तो मैं इन अंगों से ही छूट नहीं पा रहा हूं...
...और मुझे वनपुत्र को भी तबाही फैलाने से रोकना है।
एक रास्ता समझ में आ रहा है...
...कि मैं इन अंगों और वनपुत्र को आपस में लड़ा दूं।
ये दोनों एक-दूसरे को तबाही फैलाने से रोके रखेंगे...
और तब तक मैं बौना वामन के अड्डे पर पहुंचकर उसको इन 'मैनेक्विन्स' को नष्ट करने पर मजबूर कर दूंगा!
ध्रुव के सधे हुए झटकों से 'मैनेक्विन्स' के अंग एक-एक करके उड़ते हुए—

वनपुत्र के बदन से जा चिपके—
क्योंकि मेरा सारा ध्यान ध्रुव पर था—
उस नशेड़ी ने मुझे बौना वामन के अड्डे का पता बता दिया है...
मुझे उस तक पहुंचने में ज्यादा समय नहीं लगेगा।
सब मामला गड़बड़ हो गया था! ध्रुव को मार पाना तो दूर रहा, अब वह मेरी तरफ आ रहा था।
यह तो भला हो मेरा कि मैं एक न एक ट्रिक हमेशा बचाकर रखता हूं।
और दोनों में एक भीषण कशमकश शुरू हो गई—
पर मैं वह मनमोहक युद्ध नहीं देख सका—
और मेरी इस बार की ट्रिक आह! बस पूछो नहीं, बायोट्रॉन बहुत भयानक थी।
लेकिन चप्पे-चप्पे पर लगे वीडियो-कैमरे मुझे उसकी हर हरकत की खबर दे रहे थे।
समय बहुत कम था—
वह ठीक वहीं पर आ रहा था—
ध्रुव समझ रहा था कि वह मेरे अड्डे में चुपचाप पहुंच रहा है।
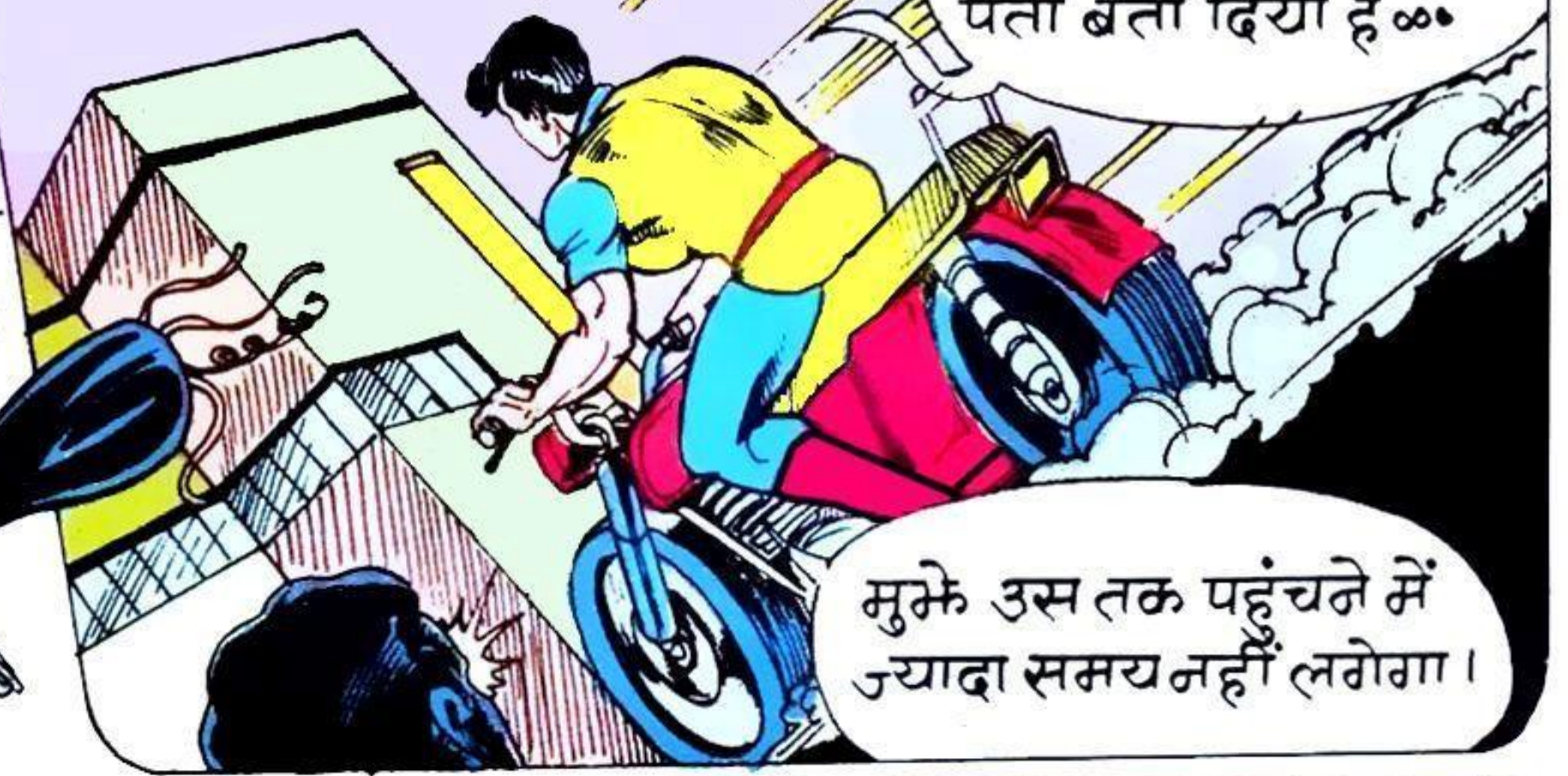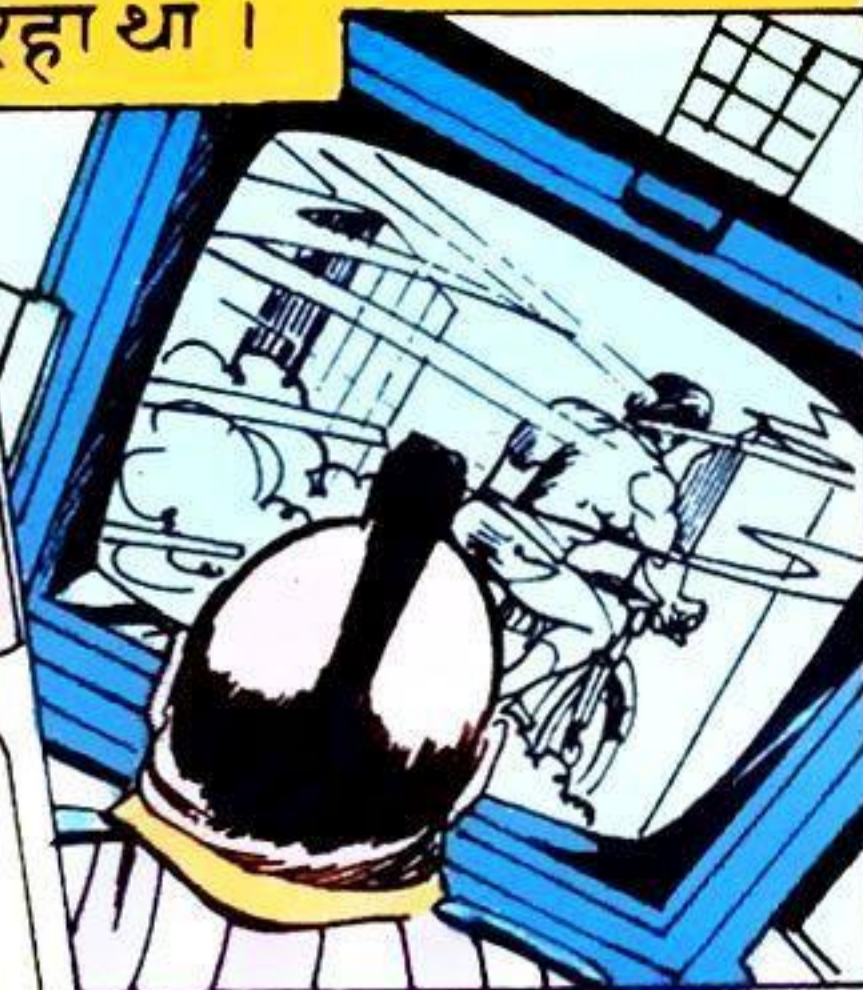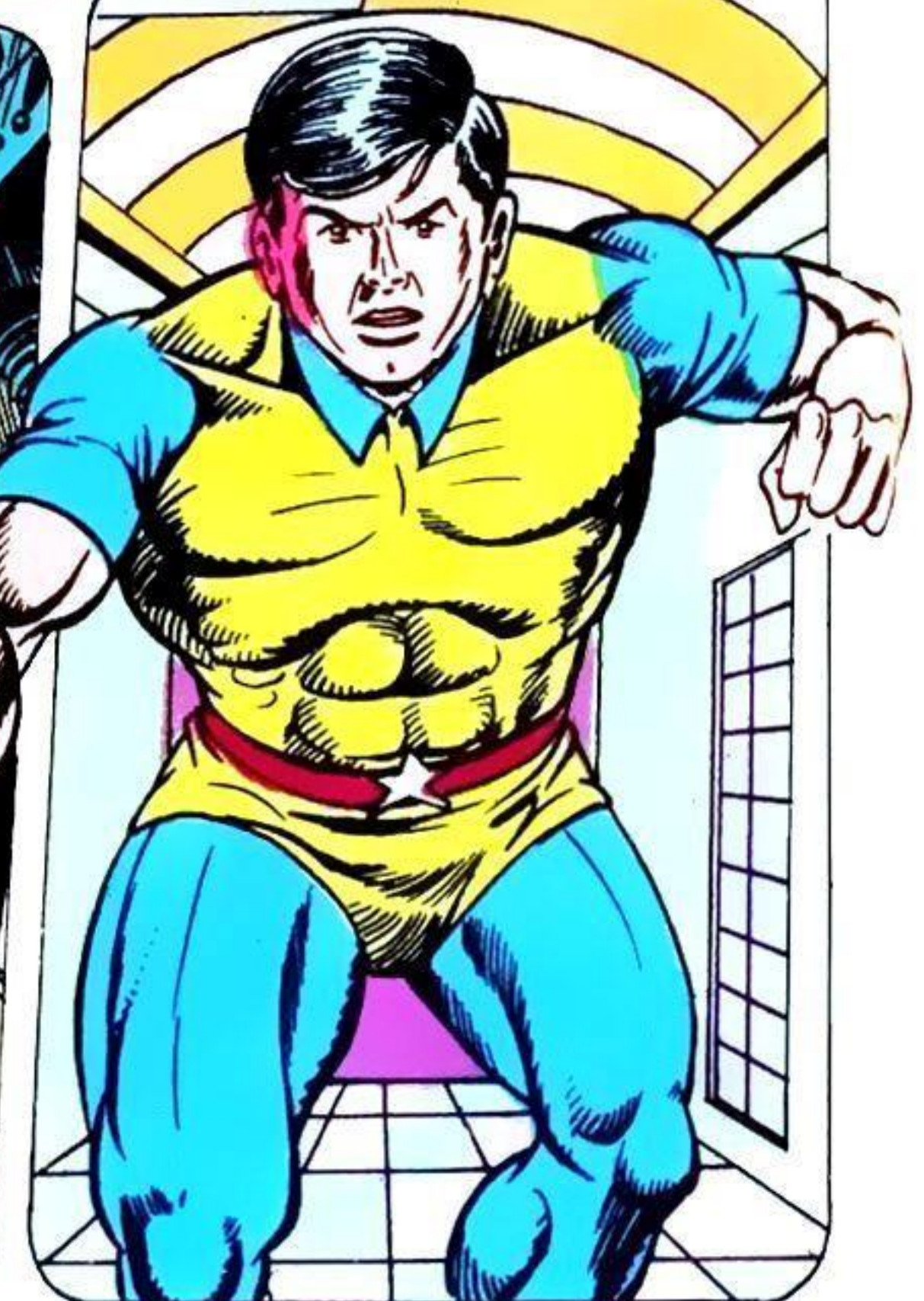
जहां पर– मैं उसका इंतज़ार कर रहा था ।
वेलकम, मिस्टर सुपर कमांडो ध्रुव ! स्वागतम्! खुशआमदीद !
बौना वामन ! आखिरकार मैंने तुमको ढूंढ़ ही लिया । अब तुम बचकर भाग नहीं सकते ।
गलत ! क्योंकि अब 'तुम' बचकर नहीं भाग सकते !
ध्यान से देखो कि इस वक्त तुम कहां पर खड़े हुए हो ।
इस वक्त तुम बौना वामन के प्रिय खेल 'सांप-सीढ़ी' पर खड़े हुए हो !
और यह पूरी 'सांप-सीढ़ी' चुंबकीय लोहे की बनी है, जिसने तुम्हारे जूतों को चिपका कर रखा हुआ है ।
दरअसल यहां पर आते समय, कॉरीडोर में फैला हुआ लोहे का चूरा तुम्हारे जूतों के सोल में चिपक गया है । और उसी ने तुम्हारे पैरों को जकड़ रखा है । तुम हिल नहीं सकते ।
START

न... न... न! जूतों को उतारने की कोशिश मत करना! इस लोहे की बनी 'सांप-सीढ़ी' में तेज करेंट दौड़ रहा है।
तुम्हारे जूते के सोल ने ही तुमको करेंट लगने से बचाया हुआ है।
पर घबराओ मत! मैं खेल में बेईमानी नहीं करता...
तुमको 'सौ' तक, यानी मुझ तक पहुंचने का पूरा मौका मिलेगा।
देखो! तुम्हारे बगल में 'डार्ट' धंसी हुई है!
उस डार्ट से तुमको...
... उस घूमते चक्र पर निशाना लगाना है, जिस नंबर पर डार्ट धंसेगा, तुम्हारे पैरों के नीचे का प्लेटफार्म तुमको उतने ही घर आगे उछाल देगा।
पर ध्यान रहे! हर सांप वाले घर पर एक ऐसा भयंकर खतरा मौजूद है, जिससे कोई भी नहीं बच सकता!
तुम भी नहीं! यहां तक कि मैं भी नहीं।
सांप के मुंह में गिरने का मतलब... एक निश्चित मौत है।
चलो! खेल शुरू करते हैं!
अगर मैं यह खेल खेलने से इंकार कर दूं तो?
तो मैं दस मिनट बाद अपने सारे 'मैनेक्विनों' को शहर में तबाही मचाने के लिए छोड़ दूंगा।
तुम्हारे पास मुझ तक पहुंचने के लिए सिर्फ दस मिनट हैं, कमांडो!
खेल से ज्यादा जोरदार तो मेरे डायलॉग थे।
ध्रुव के पास, खेल खेलने के अलावा कोई चारा नहीं था।
ठक
प्लेटफार्म ने ध्रुव को चार घर आगे उछाल दिया—

अब अगर मैं दो पर निशाना लगा सकूं...
निशाना 'दो' पर ही लगा—
तो मैं सात पर पहुंच जाऊंगा!
और सात पर...
सीढ़ी होती है!
नीचे लगे 'एस्केलेटर' यानी स्वचालित सीढ़ी ने ध्रुव को '26' नंबर पर निकाल दिया—
मैंने खेल एकदम परफेक्ट बनाया था, बायोट्रॉन!
नो बेईमानी!
ध्रुव का निशाना अचूक था। डार्टे धंसती जा रही थीं।
और ध्रुव कभी उछल-कर, और कभी सीढ़ियों के रास्ते 'सौ' नंबर की तरफ बढ़ रहा था।
अब वह '71' नंबर तक आ गया था! अगला सांप '73' पर था!
पर मैं जानता था कि डार्ट, 'दो' पर कभी नहीं धंसेगी!
याद रखना, बायोट्रॉन जी! सांप का मतलब 'खतरनाक घर' है, लम्बा वाला सांप नहीं!
नहीं तो बाद में कहोगे कि आप तो झूठ बोल रहे थे श्रीमान बौना वामन!
हां, तो डार्ट, 'चार' नंबर पर आ धंसी—
और ध्रुव का बदन उड़ता हुआ '73' नंबर वाले 'सांप' को पार करता हुआ—
'75' नंबर की तरफ बढ़ने लगा—

वह '73' नंबर वाला सांप यानी 'मेरे' आदमखोर 'वीनस-मक्खी-चूस' पौधे को लगभग पार कर चुका था—
लेकिन••• लेकिन बौना-वामन एक न एक ट्रिक बचाकर रखता है।
ध्रुव का बदन हवा में ही लटका दिया मैंने—
अब मैं इस रस्सी को धीरे-धीरे नीचे करूंगा।
ताकि मेरा भूखा आदमखोर पौधा, तेरे एक-एक अंग का मजा चबा-चबाकर ले सके।
ध्रुव का बदन धीरे-धीरे नीचे आने लगा, और भूखे पौधे का गुलाबी मुंह और फैल गया—
ही ही ही! वाह क्या सीन है!
हे हे हे! कमांडो, बुरा मत मानियो यार! तेरे जैसा खिलाड़ी हो तो थोड़ी-बहुत बेइमानी तो करनी ही पड़ती है।
लेकिन••• लेकिन बायोट्रान जी, तभी एक चिल्लाहट हवा में उभरी—
रुक जाओ!
वह दुष्ट जंगली वनपुत्र वहां तक आ गया था।
ऊपर से मुझे उस मुंह के अंदर लार की कुछ डोरियां साफ नजर आ रही थीं।
और पौधे का मुंह बंद हो गया—
और उसका नशा भी उतर चुका था।

वनपुत्र!
हां, मैं ध्रुव!
तू... तू यहां तक कैसे पहुंच गया, रे जंगली? तुझे तो मेरे बुत के अंगों ने पकड़ रखा था!
अच्छा! तो वे लोहे के उड़ते हाथ, तेरे बनाए हुए थे! तू सचमुच महादुष्ट है!
तेरे लोहे के हाथ वन पुत्र पर भारी नहीं पड़ सकते।
क्योंकि वनपुत्र के तो लाखों हाथ हैं।
मेरी एक-एक जड़ों ने तेरे एक-एक धातु के उड़ते अंगों को पकड़ लिया।
नशा उतरने के बाद, मुझे एक पेड़ ने बताया कि ये 'अंग' मुझ पर एक लड़के ने फेंके थे।
पेड़ ने बताया? मुझे तो लगता है कि तेरा नशा अभी तक नहीं उतरा!
लड़के का हुलिया सुनकर मैं तुरंत समझ गया कि वह लड़का सिर्फ मेरा मित्र ध्रुव ही हो सकता है!
पर मैं यह जानना चाहता था कि उसने ऐसा क्यों किया?
बस फिर मैं पेड़-पौधों से ध्रुव के जाने का रास्ता पूछते-पूछते यहां तक आ पहुंचा!
गलती मेरी ही थी, बायोट्रॉन जी!
उस जंगली से बात करने के चक्कर में मेरा ध्यान ध्रुव पर से हट गया।
और उतनी ही देर में ध्रुव ने अपने-आप को आज़ाद कर लिया!

और इससे पहले कि मैं कोई ट्रिक चला पाता —
ध्रुव का बदन हवा में उड़ता हुआ 'सौ' की तरफ लपका —
'सौ' की तरफ —
मेरी तरफ !
लेकिन बौना वामन तो ही ही ही एक न एक ट्रिक बचाकर रखता ही है। ही ही ही !
मैं एक नंबर पीछे खिसक गया।
ध्रुव का बदन 'सौ' पर गिरा।
और गिरते ही•••
प्लेटफार्म के नीचे लगी स्प्रिंग ने —
घटाक
टन
उसको एक जोरदार झटके से दरवाज़े के पार उछाल दिया।
और दरवाजे के उस पार••• अब कैसे बताऊं, बड़ा ही खौफनाक, लेकिन सुंदर दृश्य था ! दरवाजे के उस पार•••
छपाक
••• तेजाब का कुंड था।
पहले ध्रुव की खाल गली —
ईयायायाह !
••• फिर मांसपेशियां•••

... और फिर हड्डियां तक गल गईं !
तेजाब के कुंड में सिर्फ हड्डी के छोटे-छोटे टुकड़े तैरते नजर आ रहे थे—
मैं वहां पर रुककर उन हड्डियों का गलना भी देखता। लेकिन उस जंगली के डर से रुक नहीं पाया।
और 'सांप-सीढ़ी' के नीचे लगे एस्केलेटर द्वारा वहां से भाग आया।
बस भाई बायोट्रॉन! ऐसे खेल-खेल में ध्रुव बेचारा मेरे हाथों से मारा गया!
कुछ पलों के लिए एक बार फिर सन्नाटे का साम्राज्य कोर्ट पर छा गया—
और फिर रोबोट की मशीनी आवाज़ ने उस खामोशी को भंग किया—
इनकी कथा में कुछ सच्चाई तो है, स्वामी कंकालतंत्र!
जैसे बुत से श्रीमान ध्रुव का युद्ध, रहस्यमय वनपुत्र का राजनगर में तबाही फैलाना...
परन्तु सांप-सीढ़ी?
तो श्रीमान बौना वामन, आपने श्रीमान ध्रुव को 'सांप-सीढ़ी' नामक खेल पर मारा?
हां जी, बायोट्रॉन जी!
इस खेल के विषय में मेरे 'कंप्यूटर-चिप्स' में बहुत थोड़ी जानकारी भरी हुई है।
स्वामी, जरा 'सांप-सीढ़ी' नामक खेल को कृपया दिखाइए!
देखिए श्रीमान बौना वामन! यही होता है न सांप-सीढ़ी का खेल?
FORWA
हां, हूबहू ऐसा ही होता है, भाई बायोट्रॉन!
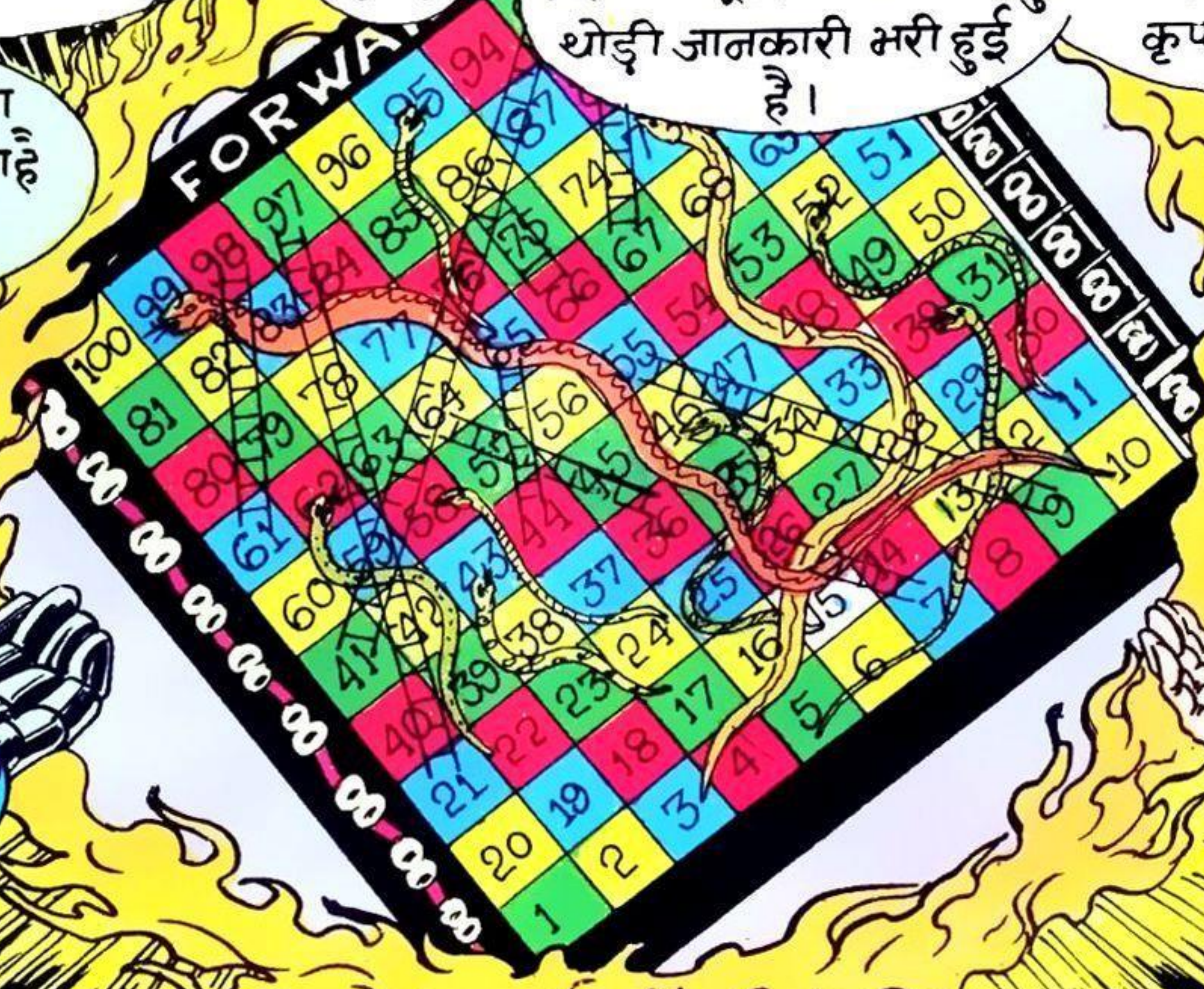
मुझे खेद के साथ कहना पड़ता है, स्वामी, कि श्रीमान बौना वामन का दावा...
...सरासर झूठा है!
झूठा! मेरा दावा झूठा!
हां, आपने कहा था कि जब श्रीमान ध्रुव आप पर कूदे, तो आप 'सौ' नंबर पर खड़े थे।
और जब वे कूदे, तो आप एक घर पीछे सरक गए!
लेकिन एक घर पीछे तो '99' होता है, और '99' पर सांप होता है। सांप यानी खतरा!
और ऐसा खतरा जिससे आप भी नहीं बच सकते थे।
त... तो मैं दो घर पीछे हट गया होऊंगा! आ... आगे बढ़ गया होऊंगा। अब मुझे इतना ध्यान थोड़े ही है।
दो घर पीछे हटने पर भी आपको '99' पार करना ही पड़ता।
...और आगे बढ़ने का मतलब तेज़ाब के कुंड में गिरना होता!
आपका दावा दोनों तरफ से ही झूठा है!
सच्चाई क्या है, खलनायक बौना वामन?
हां... ध्रुव की मुझ पर कूदने की बात सच है। फिर मैं स्केलेटर द्वारा भाग निकला था।
वहां पर कोई तेज़ाब का कुंड था ही नहीं।
हा हा हा हा हा हा
अब मैं तुमको वह ट्रिक दिखाता हूं, जो मैंने तुम्हारे लिए बचाकर रखी है।
अग्निद्वार! इसके पार जाकर देखो, कि वह ट्रिक क्या है?
बायोट्रॉन, अगले गवाह को बुलाओ!
अगली गवाह...
कुमारी ब्लैककैट।
कृपया गवाही देने पधारें!

तीसरी गवाही:
मैंने मारा ध्रुव को
कोर्ट में इस बार सन्नाटे के बजाय फुसफुसाहटें गूंज रहीं थीं–
यह तो हो ही नहीं सकता!
सब जानते हैं कि ये ध्रुव की दोस्त है।
और हमारी दुश्मन!
ये ध्रुव को क्यों मारेगी?
शांति खलनायको, शांति!
बायोट्रॉन! बयान शुरू कराओ!
हां, तो कुमारी ब्लैककैट, आपने श्रीमान ध्रुव को कैसे मारा?
मैंने उसे जानबूझ कर नहीं मारा। उसका मरना एक दुर्घटना थी। वह मेरे हाथों गलती से मारा गया!
उस दिन मैं अपने काम से लौट रही थी–
रात का अंधेरा घिरने लगा था।
सड़क भी सुनसान थी–
कि तभी– मुझे पीछे से एक जोरदार धक्का लगा–
और इससे पहले कि मैं कुछ समझ पाती–
एक गाड़ी की घरघराहट सन्नाटे में गूंज उठी–
तेज हैडलाइट से मेरी आंखें, पलभर के लिए चौंधिया गईं–

पलक झपकते ही लोहे के वे गर्म टुकड़े हवा में उड़ने लगे-

...जिनको सब लोग गोलियां कहते हैं।

उस भागते आदमी के जिस्म में कम से कम दो किलो लोहा तो धंस ही गया होगा-

मैं तेजी से उसकी तरफ लपकी-

कौन थे वे लोग? क्यों मारा उन्होंने तुमको?

मैं... पुलिस स्टेशन, रिपोर्ट लिखवाने... जा रहा था। ये... ये... सोने के स्मगलर हैं!

किसके आदमी थे ये? किसके?

आ... आई॰ जी... राजन के...।

मेरे दिमाग में कई बम एक साथ फट पड़े-

पर आगे वह कुछ नहीं बता पाया-

वह मर चुका था-

आई॰ जी॰ राजन! और सोने का स्मगलर! यकीन नहीं होता!

लेकिन मैंने नाम तो एकदम साफ सुना है। मुझे अपने शक की पुष्टि करनी होगी।

...और उसकी पुष्टि करेंगे...

...गाड़ी में सवार वे हत्यारे।

मेरे लिए जमीन पर चलने से ज्यादा आसान छतों और मुंडेरों पर कूदना था।

तीन किलोमीटर दूर—
धडप
मैंने उस कार को जा पकड़ा—
हाथ हिलाकर गाड़ी रुकवाने का समय नहीं था ।
और फिर वे गुंडे भी खतरनाक थे ।
किसी की भी जान लेना उनके बाएं हाथ का काम था—
लेकिन मेरे लिए किसी की जान लेना चुटकी बजाने जैसा काम था—
बड़म
दरअसल कुत्तों के साथ, कुत्तों की बोली ही बोलनी पड़ती है।

यह हमको कुत्ता कह रही है!

इस दो टके की छोकरी की ये हिम्मत!

मुझे तो इसका बयान शुरू से ही झूठा लग रहा है।

हां! सभी जानते हैं कि आई० जी० राजन से ज्यादा ईमानदार पुलिस वाला कभी पैदा ही नहीं हुआ।

महारवलनायिका ब्लैक कैट! हम तुम्हारे आपत्तिजनक शब्दों पर पाबन्दी लगाते हैं।

तस्करों के लिए 'कुत्ता' शब्द का प्रयोग न किया जाए।

ठीक है! आइन्दा मैं 'कुत्ते' को 'तस्कर' कह लूंगी।

मैंने उन गुंडों को एक जगह पर इकट्ठा कर लिया-

भागने की कोशिश मत करना!

तुम भाग नहीं पाओगे!

अब बताओ! तुमने उस आदमी को क्यों मारा?

बताओ!

ह... हमने किसी को नहीं मारा!

तुमको गलतफहमी हुई है।

मेरी उंगली में एक हरकत हुई-

ईयाऽऽऽ

और उस गुंडे की चीख से सारे पेड़ तक कांप उठे-

अब बताओ! तुमने उस आदमी को क्यों मारा?

वह पहले हमारा आदमी था! फिर गद्दार बन गया! पु... पुलिस के पास मुखबरी करने जा रहा था।

हमको बॉस ने उसको मारने का आर्डर दिया!

हमने मार दिया!

मेरी आवाज गुस्से से कांप रही थी।

तुम्हारा बॉस! कौन है तुम्हारा बॉस?

हम... हमने बताया तो वह हमको मार...

बता!

आ... आई० जी० राजन!

खून मेरे सिर में चढ़ गया।
मेरे दिमाग की नसें फटने लगीं —
मेरा शक, यकीन में तब्दील हो चुका था।
अपराधियों से तो मुझे वैसे भी सख्त नफरत है।
लेकिन ऐसा पुलिसवाला जो अपराधी हो, उसको तो मैं जिन्दा छोड़ नहीं सकती।
मैंने उन गुंडों को अपने साथ ले जाने की ठान ली —
वे, मेरे पास, आई० जी० राजन के खिलाफ इकलौते सबूत थे।
लेकिन इससे पहले कि मैं उनको अपने साथ ले जा पाती...
...रोशनी से मेरा बदन नहा गया।
...ब्लैक कैट? क्या हो रहा है यहां पर?
एक जादुई आवाज, हवा में तैर उठी —
मेरा पूरा बदन सिहर उठा। डर से या रोमांच से, मुझे पता नहीं —
सुपर कमांडो ध्रुव की शख्सियत ही ऐसी थी।
ये लोग कौन हैं?
सोने के तस्कर!
ओह समझा! और तुमने इनको पकड़ा है! वाह! मैं इनको पुलिस स्टेशन ले जाता हूं!
मैं उन गुंडों को पुलिस स्टेशन जाने नहीं दे सकती थी —
वहां पहुंच जाने पर उनकी जान खतरे में पड़ सकती थी।
मैंने इनको पकड़ा नहीं है मिस्टर ध्रुव! ये मेरे आदमी हैं!
ओह! तो अब तुम सोने की तस्करी करने लगी हो!
तब तो मुझे तुमको भी पुलिस स्टेशन ले जाना पड़ेगा... आह!
तड़ाक
कोशिश कर लो, मिस्टर ध्रुव! पर शर्त लगा लो, नाकामयाब रहोगे।
ध्रुव के साथ कई समस्याएं थीं, जैसे किसी की जान न लेने की कसम —
— और लड़कियों पर हाथ न उठाने की कसम —

- लेकिन एक कमज़ोरी मेरी भी थी -
सुपर कमांडो ध्रुव सभी की तरह मेरा भी आदर्श था।
ताड़.
मैं, उस पर कोई घातक वार नहीं कर सकती थी-
लेकिन इसके बावजूद भी मैं यह अच्छी तरह से जानती थी, कि मैं ध्रुव से जीत नहीं सकती।
क्योंकि ध्रुव को वार बचाने के अलावा-
- बिना हाथ लगाए, हराने के -
कई तरीके आते थे।
'फायर- हाइड्रेंट' से निकली पानी की मोटी धार के भीषण धक्के ने मुझे पीछे उछाल दिया-
और पलटकर वार कर पाने से पहले ही-
मैं ध्रुव की कैद में थी।
मैंने सबसे पहले नजर घुमाकर, उन तस्करों की तरफ देखा -
वे भाग चुके थे।
?
अब ध्रुव से और लड़ने का कोई मतलब नहीं था।
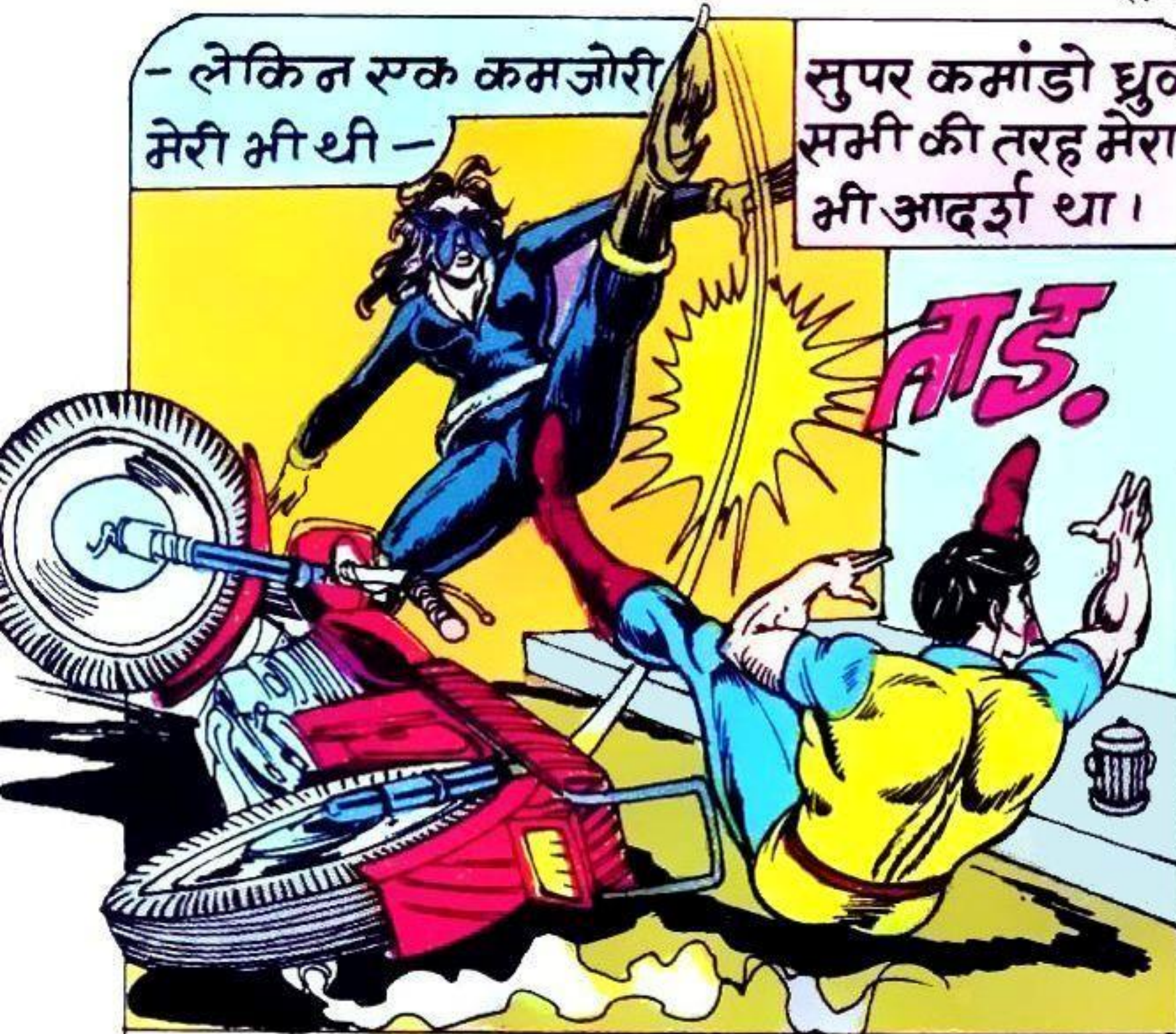
हमारी-तुम्हारी लड़ाई खत्म, ध्रुव!
अब मैं यहां पर नहीं रुकूंगी... क्योंकि मुझे इन सोने के तस्करों के बॉस को खत्म करना है।
लेकिन जाते-जाते तुमको एक बात बता देना चाहती हूं।
इस गैंग का लीडर तुम्हारा एक बहुत करीबी आदमी है!
उसे बचा सको तो बचा लो!
मेरा अगला कदम था आई० जी० राजन को खत्म करने का प्लान बनाना-
और उसके लिए, उसके घर पर नजर रखना बहुत जरूरी था-
ध्रुव को कई सवालों के सागर में डूबता-उतराता छोड़कर, मैं अंधेरे में गुम हो गई।
उसके घर पर, यानी ध्रुव के घर पर!
आखिर ध्रुव, आई० जी० राजन का बेटा था।
मेरा पॉवर फुल टेलिस्कोप मुझे उस घर का एक-एक दृश्य दिखा रहा था।
ध्रुव और उसकी छोटी बहन के बीच में, मीठी-मीठी लड़ाई हो रही थी।
क्यों नहीं हो सकता? हो सकता है, हो सकता है, हो सकता है!
पर यह बात मुझे बाद में पता चली कि हमारी पूरी बातचीत को बड़े ध्यान से सुना जा रहा था।
और उनके होंठों का हिलना मुझे बता रहा था कि, वे क्या बात कर रहे हैं।
तू करके देख!
मैं तेरी टांग तोड़ दूंगा!

क्या हो सकता है, भाई, और क्या नहीं हो सकता है, जरा मुझे भी तो बताओ!

शाम के सात बजे किस बात के लिए झगड़ा हो रहा है?

पापा! देखो न! भइया रात-रात-भर बाहर रहता है!

इसको घर पर रहने को बोलो न!

अक्ल की दुश्मन, मैं तो गश्त लगाने के लिए रात भर बाहर रहता हूं।

नहीं तो आज से मैं भी बाहर जाऊंगी! रात भर के लिए!

आज से मैं भी गश्त लगाऊंगी।

तुम किसलिए गश्त लगाते हो?

तू किसलिए गश्त लगाएगी?

मैं? मैं... मैं तो गुंडे-बदमाशों को पकड़ने के लिए गश्त लगाता हूं!

तो मैं भी उनको पकड़ूंगी।

तू... हा हाहा! हाहाहा! तू! अरे! किसी ने 'हूऊ' करके डरा दिया तो घर वापस भागते नहीं बनेगा!

क्यों? मैं डरपोक हूं? कमजोर हूं किसी से? अरे हाथ हिला भी दूं, तो दस बारह गुंडे तो ऐसे ही जमीन चाट जाएं!

महागप्पी थी ध्रुव की बहन! और वह दून-तीन की हांकती ही रहती, अगर बीच में न बोल उठता वह बहुरूपिया...

...आई० जी० राजन-

अच्छा खामख्वाह की बहस रहने दो!

सर्दियां शुरू हो गई हैं!

जरा 'फायर-प्लेस' में आग जलाने का इंतजाम तो करवाओ!

मैं यहीं बैठकर चाय पियूंगा!

मुझे धीरे-धीरे, आई० जी० राजन की दिनचर्या का पता चल रहा था—

आई० जी० राजन शाम को लगभग सात बजे घर आता था! 'फॉयर-प्लेस' में आग जलवाता था००० और उसके सामने बैठ कर चाय पीता था।
उसको खत्म करने का वही सबसे अच्छा समय था!
मेरे दिमाग में उसको खत्म करने का, एक बहुत अच्छा आइडिया आ रहा था।
समस्या सिर्फ एक ही थी, ध्रुव! मैं ध्रुव को मारना नहीं चाहती थी!
लेकिन शाम सात बजे ध्रुव घर पर ही होता था! उस वक्त बगैर ध्रुव को खत्म किए, आई० जी० राजन को खत्म करना असंभव था।
इसी समस्या का हल सोचते-सोचते एक दिन मैं जब, नजर रखने के बाद वापस लौट रही थी तब—
अरे! यह क्या? कोई टॉर्च से 'मोर्स-कोड' में सिग्नल दे रहा है।
और उस सिग्नल का मतलब है०००
ब्लैककैट, बचाओ!
मैं बिजली की-सी फुर्ती से उस जगह पर उतरी, लेकिन—
अरे! यहां पर तो कोई भी नहीं०००
हिलना मत! वर्ना तुम्हारे बदन को जयपुर का हवामहल बना दिया जाएगा।
जिसमें खिड़कियां ही खिड़कियां हैं!
मैंने और आगे सुनने का इंतजार नहीं किया—
ताड़
मेरा फिल्मी डॉयलाग सुनने का मूड नहीं था—
मेरा मन था०००

... चीखें सुनने का...
तड़ाक
ई या या या ऽऽ ह
... कराहें सुनने का—
खचाक
आऽऽह!
और हड्डियों के टूटने की आवाजें सुनने का—
मैदान साफ होने में कुछ ही मिनट लगे होंगे—
कड़ड़क
अब मैं उन गुंडों से, इस बद्तमीज़ी का कारण पूछ ही रही थी कि—
वाह! वाह! वाह!
जो देखना चाहता था वह देख लिया मैंने!
तड़ तड़
कौन हो तुम?
मैं आपका गुलाम हूं, मैडम ब्लैककैट!
और मेरे आदमी भी आपके ही गुलाम हैं!
तो फिर मुझ पर यह हमला क्यों?
आपकी शक्ति को परखने के लिए मैडम!
हम सब आई. जी. राजन के आदमी हैं! मैं गैंग का डिप्टी लीडर हूं, गोपाल!
हम सब आत्मसमर्पण करना चाहते हैं, पर कर नहीं सकते!

क्यों ?
आत्मसमर्पण तो पुलिस के सामने ही किया जाता है, और पुलिस का सबसे बड़ा अफसर ही हमारा बॉस है।
अब बगैर उसके रास्ते से हटे, हम आत्मसमर्पण भी नहीं कर सकते।
अगर आप उसे रास्ते से हटा दें, तो हम आत्मसमर्पण करने को तैयार हैं।
मेरे दिमाग में तुरन्त एक बिजली सी कौंध गई–
शाम को सात बजे, ध्रुव को घर से बाहर करने का रास्ता मुझे समझ में आ रहा था –
उस आई० जी० को तो मैं रास्ते से चुटकी बजाते ही हटा दूंगी।
लेकिन उसके लिए तुमको मेरा एक काम करना पड़ेगा! एक डकैती डालनी पड़ेगी।
डायमंड एक्सचेंज सेंटर में–
शाम के पौने सात बजे–
खबरदार! कोई हिलने की कोशिश न करे!
डकैती डाले हुए एक मिनट हो चुका था–
और मेरी बेसब्री बढ़ती ही जा रही थी–
एक-एक मिनट मेरे लिए भारी पड़ रहा था –
खतरे का अलार्म तो निश्चित तौर से बज चुका होगा ...
ध्रुव अब तक क्यों नहीं आया?
मेरी पलक आधे सेकेंड के लिए झपकी होगी...
...कि पूरा दृश्य ही बदल गया–
धाड़
सुपर कमांडो ध्रुव घटनास्थल पर आ चुका था–
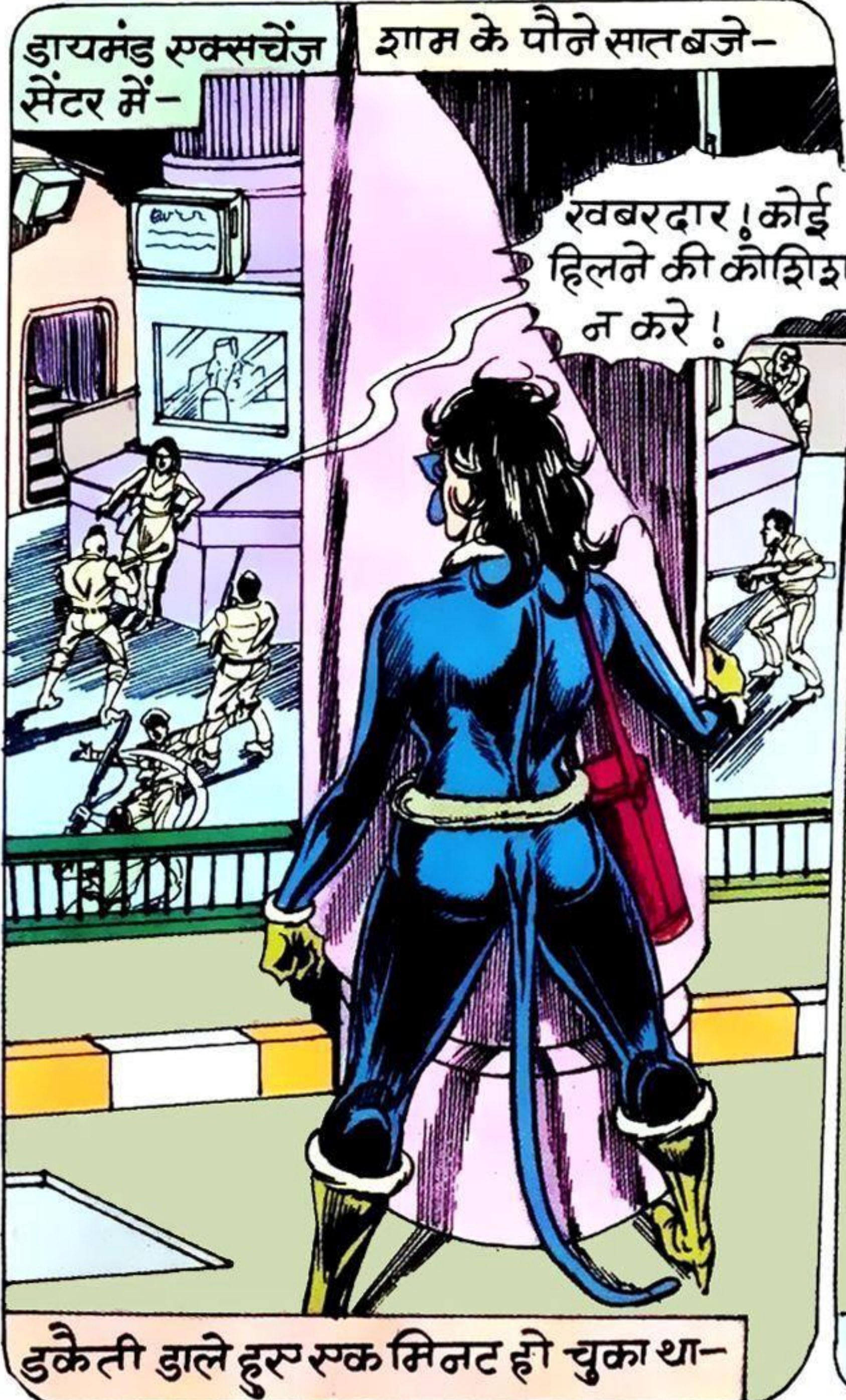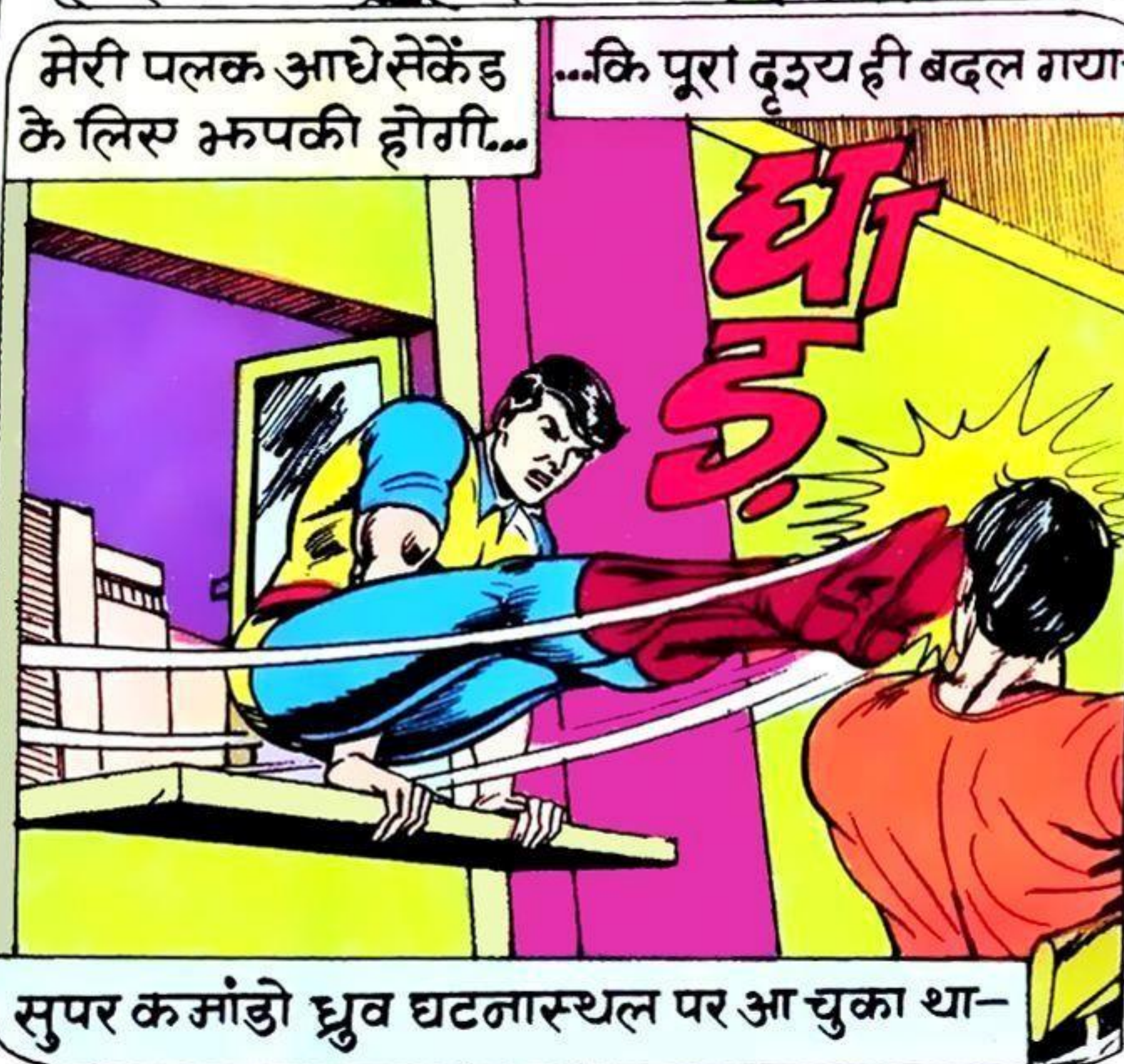
प्लान के हिसाब से तो मुझे वहां से तुरन्त, आई० जी० राजन के घर की तरफ रवाना हो जाना था–
लेकिन मैं ऐसा नहीं कर सकी–
मंत्रमुग्ध हो गई थी मैं–
– सुपर कमांडो ध्रुव की वह बेमिसाल एक्शन पैक्ड फाइट देखकर–
बिजली भी शायद उसकी फुर्ती के सामने मात खा जाती–
और गोलियां – गोलियां तो उसके अगल-बगल से ऐसे गुजर रही थीं जैसे कि उसको पहचानती ही नहीं–
अचानक मुझे ध्यान आया! ओफ मुझे तो आई० जी० राजन को खत्म करना है! और मेरे पास ज्यादा वक्त नहीं है।

ध्रुव को अभी एक-दो मिनट का समय लगना था—
और आई० जी० राजन का घर 'डायमंड एक्सचेंज' से ज्यादा दूर नहीं था—
और उसके घर पर सिर्फ दो सिपाहियों का मामूली सा पहरा था।
उनकी नजर बचा-कर छत पर पहुंचना मामूली बात थी मेरे लिए—
और छत पर पहुंचकर मुझे गुम हो जाना था, 'फायर-प्लेस' की चिमनी के अन्दर—
और चिमनी के अंदर पहुंचकर, दीवार पर चिपका देनी थी।
डायनामाइट की छड़ें—
अब वह घर आकर, फायर प्लेस में आग जलवाएगा! आग की लपटें धीरे-धीरे, डायनामाइट तक पहुंचेंगी—
डायनामाइट तपेगा—
और फिर एक धमाके के साथ फटेगा!
और उसी के साथ फट जाएगा आई० जी० राजन का शरीर—
सात बजने ही वाले थे। आई० जी० राजन घर आ चुका था।
घर के बाहर उसकी गाड़ी मैंने खड़ी देख ली थी—
मेरा प्लान पूरा हो चुका था—
अब धमाका होने से पहले मुझे वहां से बच निकलना था।

लेकिन लाख सतर्कता के बावजूद भी–
ए, कौन रुक हो तुम? जाओ।
इसको छोड़ना मत, रामसेवक! यह आई० जी० साहब के घर के अंदर से आई है।
मुझे रोककर उन सिपाहियों ने अपनी जानों के साथ दुश्मनी मोल ले ली थी –
खचाक
आई० जी० राजन की बेटी मुझे देख रही थी–
लेकिन शायद डर के मारे, वह चिल्ला तक नहीं पा रही थी–
मैं वहां से बचकर भाग निकली–
लेकिन सिर्फ दो कदम तक–
मेरा रास्ता रोककर खड़ी हुई थी–
चंडिका! तुम यहां?
हां, मैं! तुमसे पूछने आई थी कि तुम यहां पर क्या करने आई थी?
रिपोर्ट लिखवाने।
चंडिका भी एक अनोखी लड़की थी। कौन थी यह तो मैं नहीं जानती?
लेकिन थी वह अपराधियों की दुश्मन–
और मैं थी एक अपराधी–
उसको कुछ समझा पाने का समय मेरे पास नहीं था–

वहां से, जल्दी से जल्दी निकल भागना ही मेरा मुख्य मकसद था—
तड़ाक्
पर चंडिका का मुख्य मकसद, मुझे रोकना था—
लेकिन यह मैं समझ रही थी कि उससे साफ-सुथरी लड़ाई लड़कर जीतना असंभव है—
उसके लिए तुमको कम से कम पचास साल और इंतजार करना पड़ेगा, ब्लैक कैट! उससे पहले मरने वाली नहीं हूं।
मुझे नहीं मालूम था कि चंडिका ने ऐसी जबर्दस्त फाइटिंग कहां से सीखी थी—
धाााड़
वैसे तुमको इतना इंतजार करने की जरूरत नहीं पड़ेगी।
मैंने पहले ही ध्रुव को सिग्नल भेजकर यहां बुला लिया है, वह तुमको ज्यादा अच्छी तरह से जानता है।
वह आकर खुद ही पता कर लेगा कि तुम्हारे यहां पर आने का मकसद क्या है।
धम्म
लगता है कि अब मुझे तेरी लाश पर से गुजरकर ही जाना होगा चंडिका!
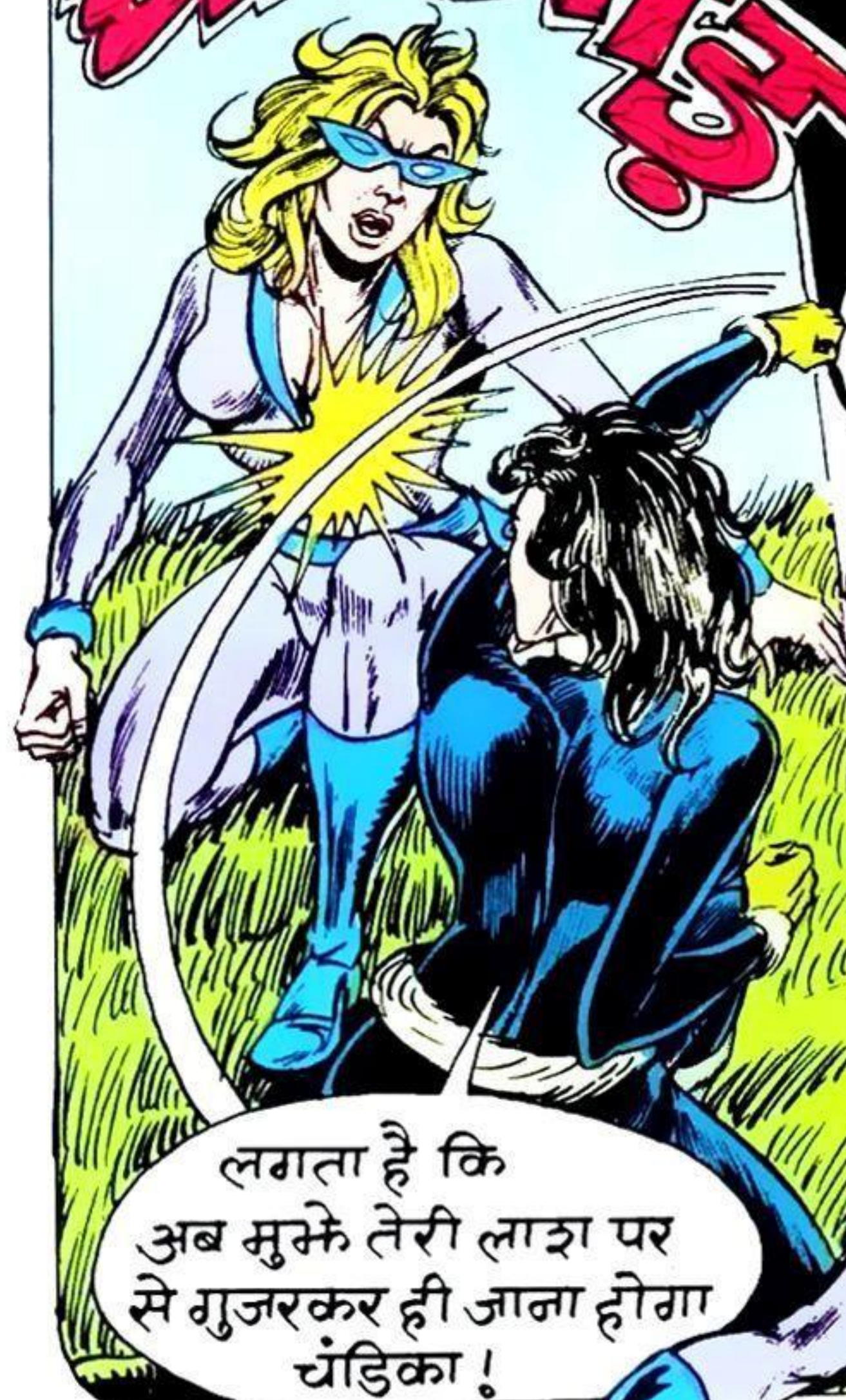
उसके आने तक मैं यहां से उड़न छू...
ब्लैककैट! चंडिका!
रुक जाओ!
आवाज कानों में पड़ते ही मेरे शरीर में फिर से सिहरन दौड़ पड़ी—
ध्रुव एक और लड़ाई जीत कर वापस आ गया था—
मुझे इस गोपाल ने सब कुछ बता दिया है, ब्लैक-कैट! तुमको जबरदस्त गलतफहमी हुई है।
यह है सोने के स्मगलरों का बॉस! ...यानी इल्लैया आई० जी० राजन...
गोपाल राजन।
इसके आदमियों ने हमारी और तुम्हारी लड़ाई के दौरान हुई सारी बातें सुन ली थीं। और वही सुनकर इस आई० जी० राजन ने यह प्लान बनाया था।
ओफ्! इतनी बड़ी गलतफहमी! इतनी बड़ी मूर्खता!
मेरा दिमाग चक्कर खा रहा था। सुन सब कुछ रही थी पर समझ में कुछ भी नहीं आ रहा था—
मेरी लड़खड़ाती जुबान ने, बड़ी मुश्किल से कुछ शब्द उगले—
ध... ध्रुव! अपने डैडी की जान बचा लो!
फायर-प्लेस की चिमनी में डायनामाइट फिट है...
इस प्लान के जरिए इसके दो दुश्मन एक साथ इसके रास्ते से हट जाते...
एक आई० जी० पुलिस राजन मेहरा और दूसरी ब्लैककैट!
...जो किसी भी समय फट जाएगा।
ध्रुव ने आगे कुछ भी सुनने का इंतजार नहीं किया—
उसके दिमाग ने इतनी ही देर में सब कुछ समझ लिया होगा।
कि फायर-प्लेस में आग जल चुकी होगी—
और चिमनी काफी गर्म हो चुकी होगी।
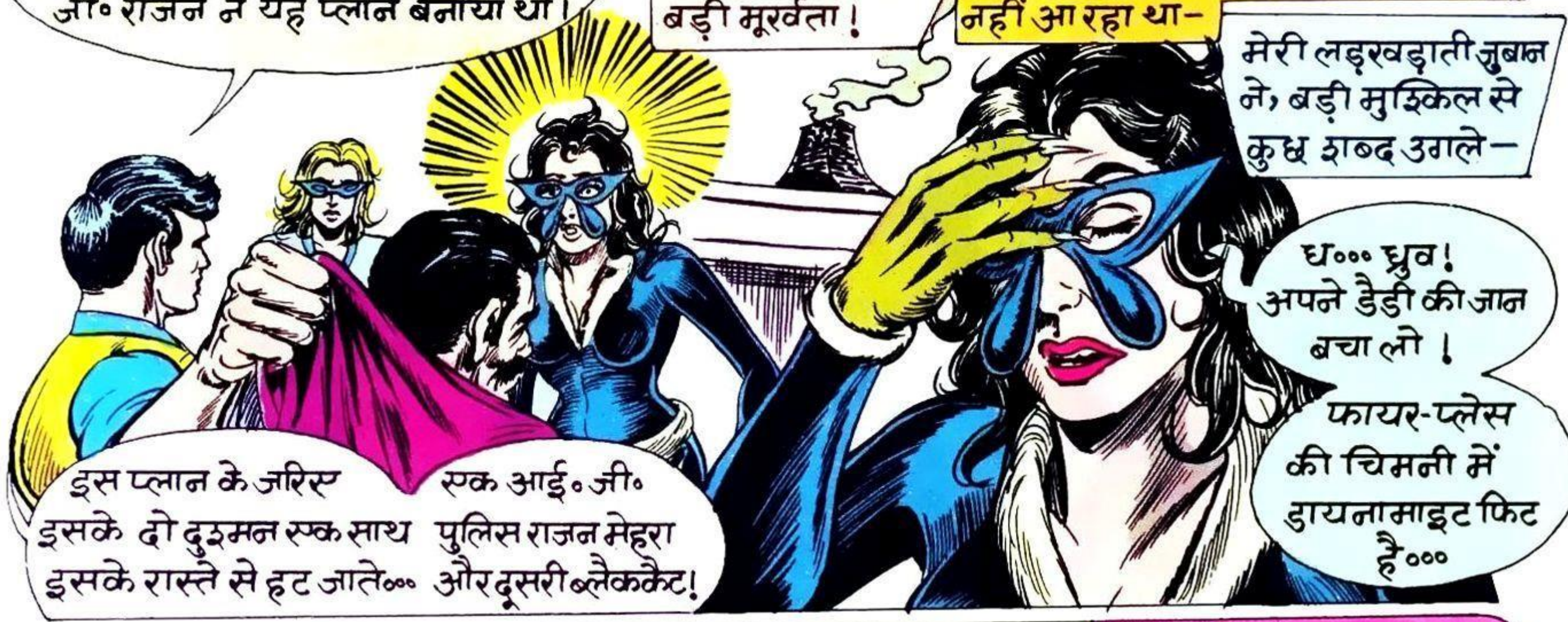
- अब उस रास्ते में अन्दर नहीं जाया जा सकता-
चंडिका भी, न जाने क्यों अपनी जान खतरे में डालकर, ध्रुव के पीछे लपकी-
वह मुझे भी भूल चुकी थी।
वह ध्रुव से काफी पीछे थी -
ध्रुव, पहले फायर-प्लेस तक पहुंचा होगा।
उसके चिल्लाने की आवाज़ बाहर तक आई-
पापा हटिए।
बात समझाने का समय नहीं रहा होगा।
उसने अपने पिता को एक तरफ धक्का दिया होगा।
लेकिन शायद वह खुद हट नहीं पाया होगा।
धड़ाम
क्योंकि धमाके के ठीक बाद...
- पत्थर और ईटों के टुकड़ों के साथ, ध्रुव का शरीर हवा में उड़ता हुआ -
...बाहर आ गिरा -
उस बेमिसाल इंसान का क्षत-विक्षत शरीर, जिसने हमेशा दूसरों का ही भला किया -
मरते दम तक भी-
उसकी सांसें खामोश थीं। बहता खून भी धीरे-धीरे जमता जा रहा था।
हर हरकत थम चुकी थी।
सुपर कमांडो ध्रुव... मर चुका था।
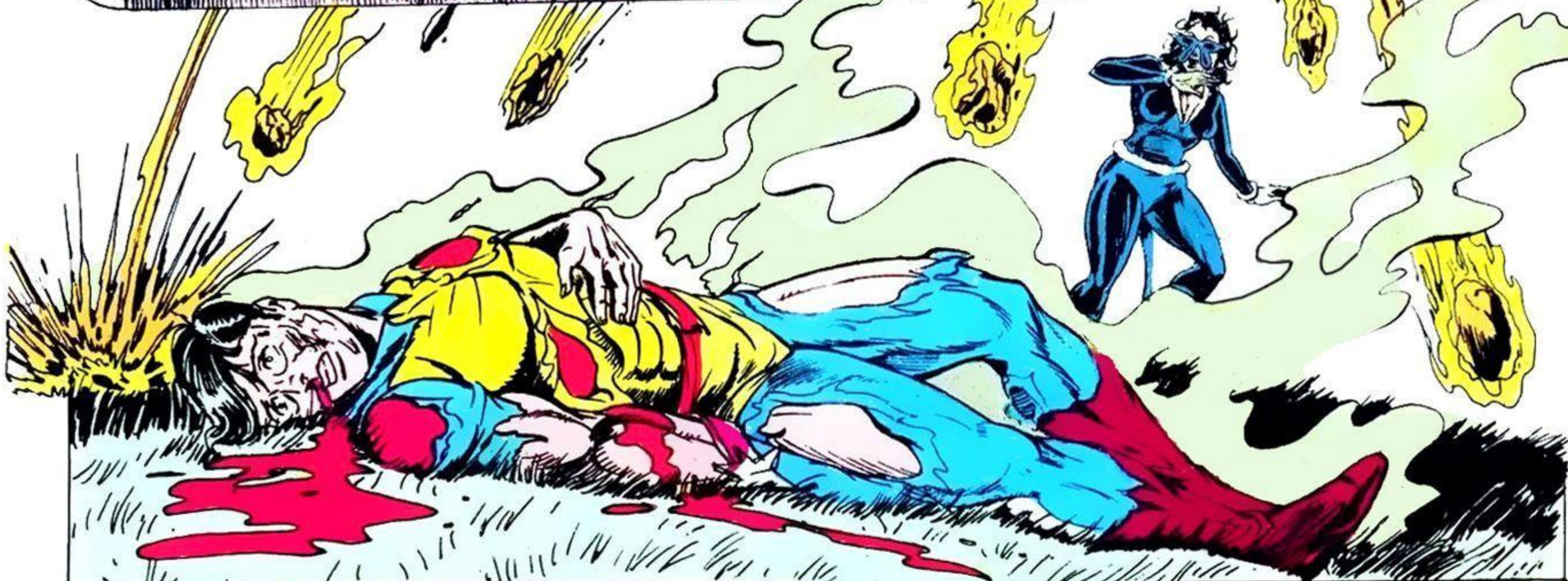
मेरा पहले से ही घूमता दिमाग और चक्कर खाने लगा। बिना कुछ सोचे-समझे मैं वहां से निकल भागी। घर आकर चार दिनों तक, बिस्तर पर पड़ी रही।
लेकिन अखबारों में कुछ नहीं निकला। ध्रुव की मौत की खबर सेंसर कर दी गई थी।
पर ऐसी खबरें दबती नहीं हैं। धीरे-धीरे सबको पता लग गया कि ध्रुव मारा गया है। हर अपराधी दावा करने लगा कि ध्रुव को उसने मारा है!
पर सच्चाई सिर्फ मुझे पता थी।
और उसी सच्चाई को आज मैं इस कोर्ट में बयान कर रही हूं।
हुम! तो कुमारी ब्लैक कैट, आपने फायर-प्लेस में डायनामाइट विस्फोटक की छड़ें फिट कर दी थीं।
वे धीरे-धीरे गर्म हुईं। और फिर इतनी गर्म हुईं कि वे फट गईं।
और उस धमाके से श्रीमान ध्रुव मारे गए!
हां, ठीक ऐसा ही हुआ।
स्वामी कंकालतंत्र! ब्लैक कैट का बयान शत प्रतिशत झूठा है। इन्होंने ध्रुव को नहीं मारा!
डायनामाइट नामक विस्फोटक आग में जलकर कभी नहीं फटता है। उसमें धमाका करने के लिए, उसके अन्दर पलीता डालकर, पलीते में आग लगानी पड़ती है।
दरअसल कोई भी बारूद सिर्फ आग में जलकर नहीं फट सकता। आग में वह बाकी की चीजों की तरह ही जलकर राख हो जाता है।
यह बात तो, हर वह बच्चा जानता है, जो दीवाली नामक त्योहार के दिन 'पटाखे' नामक विस्फोटक छुड़ाता है।
कि पलीता निकालकर आग लगाएं तो पटाखा नहीं फटता।
ब्लैक कैट, तुम्हारा दावा खारिज किया गया!
पर तुमने झूठ क्यों बोला?
ध्रुव एक अच्छा इंसान था कंकालतंत्र! बहुत अच्छा!
ऐसे अच्छे इंसान को मारने का श्रेय ये अपराधी लें, यह मुझे गंवारा नहीं था।
इसलिए मैंने झूठ बोला! डायनामाइट फिट करने तक की कहानी तो सच है।
लेकिन वह डायनामाइट फटा नहीं था। ध्रुव मेरे हाथों से नहीं मारा गया।

हत्यारा कौन

इस महारोचक दर्दनाक कथा का अंतिम भाग अतिशीघ्र प्रकाशित हो रहा है...

आंसू थामकर इंतजार करिए...

क्रमशः